दोहा—करी प्रीति नँदलाल सों, हम जानति सब ताइ ॥
यहै कहति सब गोपिका, हमते बात दुराइ ॥
चौ०-हमते बात दुराइ तबहिं तो सहज स्वभाव लखाईजी ॥
अब हरि संग करी चतुराई सो किमि रहत छिपाईजी ॥
आज मौनधर किये दुराऊ पुनि किहिं भांति निभाईजी ॥
दिन द्वै चारटार अब तुम कहुँ सोर करो जिन जाईजी ॥ १ ॥
करन देहु इनको लँगराई आप प्रगट ह्वै जाईजी ॥
तब इक सखी कहति यह आई कहा कहत तू माईजी ॥
तुम जु कहत वह जानत नाई हम वाके नख माईजी ॥
सात बरसते प्रीति लगाई आज जान तुम पाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कबधौं पीवत मीन जल, लखि पावत नहिं कोउ ॥
हरिके ढँग सीखे उनहिं, बारहबानी दोउ ॥
चौबोला—बारहबानी दोउ ऐसे सब कहति दुहुँनके हालाजी ॥
और न बात सुहाय बसे मन राधा अरु नँदलालाजी ॥
यह रस जान अनूप विहारन प्रभुको प्रेम विसालाजी ॥
करिके कृष्ण स्वरूप होय रहीं सब तरुणी ब्रजबालाजी ॥ १ ॥
श्रीराधा प्रातहि तहँ आई जहँ सब जुरी अथाईजी ॥
आवति लखि सबरहीं चुपाई देखि बदन सकुचाईजी ॥
करत हुतीं उनहींकी बातें तासे अधिक लजाईजी ॥
अति आदर करिकै बैठारी कह्यो आज कहा आईजी ॥ ॥ २ ॥
दोहा—कहा हमारी सुधिलई, बड़ी कृपा करि आइ ॥
तुम आदर करती अधिक, कहा नई मैं आइ ॥
चौबोला—कहा नई मैं आइ अनोखी आजहि आई न्यारीजी ॥
मैंतो आवत जात सदाई तुम यह कहत कहारीजी ॥

१ छिपाइ। २ अवाक्। ३ सभा।

बैठनको नहिं कहैं कहारी कहा कहति तू प्यारीजी॥
तू आई करि कृपा हमारे हमहुँ मौन रहेंधारीजी ॥ १॥
करी तरक तुम मोसों जानी हँसि बोली यों प्यारीजी॥
तादिनको बदलो यह लीनों मोसों चोट उतारीजी॥
यह सुनि हँसीं सकल ब्रजनारी कहन लगीं सुन प्यारीजी॥
दाँव चोट हम जानत नाहीं तुमहीं जानन हारीजी॥ २॥
दोहा—दाँव घात जानाति तुम्हें, हमतो सूध स्वभाव॥
तोहिं मान आई सदा, मानति तैसेइ भाव॥
चौबोला—मानति तैसेइ भाव तादिनकी तुम राखी मनलाईजी॥
मान लई तेरी कही सब हम डारी बिसराईजी॥
चोर करै चोरीकी बातैं ज्ञानी ज्ञान बताईजी॥
सुनि यह कुँवरि मनहिं मुसकाई कह्यो सखि सांच सुनाईजी॥१॥
जैसी जाके मनमें भाई बात करत मुख वाईजी॥
मैं तो साँच कही तुमसोंरी कैसे कुँवर कन्हईजी॥
हरषि सखिन तब उरसोंलाई कहति कहा रिसहाईजी॥
हँसति कहति तोसोंरी तू अब मनहिं बिलग क्यों ल्याईजी॥२॥
दोहा—तुमहीं हरिको नाम कहि, हम कछु कह्यो सुनाइ॥
जब हरि सँग मोको लखो, तब कहियो मन भाइ॥
चौबोला—तब कहियो मन भाइ कैसेहूं चलहु यमुन सब अन्हाईजी
कै मोसों अब फेर लरोगी बूझति मैं तुम पाईजी॥
यहै बात गठबंधन कीनी भूलहुँ कबहूं नाईजी॥
चलहु न्हान कबकी मैं आई गहि गहि भुजा उठाईजी॥ १॥
लेसखियन सुकुमार किशोरी न्हान यमुनको जावैजी॥
चलीं न्हान यमुना सब आली सब मन अति सुखपावैजी॥
नवनागर शुभ सब मृगनैनी रूप कहत नहिं आवैजी॥

कृष्ण प्रेमरस एक मती सब आनँद उर न समावैजी ॥ २ ॥

अथ स्नान विधि लीला ॥

दोहा–गईं यमुन सब सुन्दरी, कनक बरन नव अंग ॥
करत परस्पर कौतुहल, हास विलास उमंग ॥

चौबोला–हास विलास उमंग गईं तट यमुना गोप कुमारीजी ॥
सँग सोहत वृषभानु दुलारी सकल शिरोमणि प्यारीजी ॥
बैठीं सलिल न्हान अतुराई देखि श्याम जल भारीजी ॥
विहरति जलविहार सुखकारी श्यामा सह सब नारीजी ॥ १ ॥
कंठ प्रमाण नीरमें ठाढीं सो छबि बरनि न जाईजी ॥
करत विविध विधिहास विलासा एकन एक सुहाईजी ॥
लैलै जल कर माहिं परस्पर डारति सब हरषाईजी ॥
मानो शशि सेना सजि आये लरत जलज जल माईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनत तहाँ आये हरी, जहँ क्रीडत ब्रजबाल ॥
कोटि काम सोभा हरण, सुंदर श्री नँदलाल ॥

चौबो०-सुन्दर श्रीनँदलाल निरख रहे विहरति सखिमिल संगैजी
कबहुँ मधुर कल वेणु बजावें गावत तान तरंगैजी ॥
काछे नटवर भेष विसाला चित्रत चन्दन अंगैजी ॥
ठाढे वोट कदमकी आई कीने अंगनि भंगैजी ॥ १ ॥
ब्रजतिय मन चातक शुभकारी नव घनश्याम कन्हाईजी ॥
ध्यान काम पूरण सकल मन नख शिख अति सुखदाईजी ॥
पद नख इन्दु प्रभा द्युतिहारी चरण कमल छवि छाईजी ॥
जानु जंघ अति सुभग सुहाई रंभा लखितलजाईजी ॥ २ ॥

दोहा–कटि कछनी अरु पीतपट, केसर पटतर नाइ ॥
छुद्रावलि छबि छावही, नाभि वरणि नहिं जाइ ॥

चौबोला—नाभि वरणि नहिंजाइ सुभग उर मोतिनमाल सुहाईजी
विच रोमावलि झलक विसाला सो छबि वरणि न जाईजी ॥
मनहुँ गंग विच यमुना आई मिलि त्रयधार बहाईजी ॥
बाहु दंड दोऊ तट सुन्दर शोभित अति सुखदाईजी ॥ १ ॥
बनमाला तरु तीर सुहाई फूलि रहे सुखदाईजी ॥
कंबु कंठ त्रियरेख सुहावन तीन भुवन छबिपाईजी ॥
चिबुक चारु सुभग मनमोहे मुख छबि अति मन भाईजी ॥
अधर दशन छबि वरणि नजाई तडितबिंब छबि छाईजी ॥२॥

दोहा—शुकनासाखंजन नयन, भ्रुकुटि काम कोदंड ॥
मणि कुंडल रवि छबि हरण, सोहत शीश शिखंड ॥

चौबो०-सोहत शीश शिखंड निरख हरि उपमागई लजाईजी ॥
पटतर को पहुँची नाहीं तब जहँ तहँ देत दिखाईजी ॥
भूमि कोऊ वन कोउ जल माईं हरि लखि रहीं छिपाईजी ॥
कोटि मदन पुनि पुनि बलिहारै मुकुट किलटकसुहाईजी ॥ १ ॥
कुंडल निरखि भ्रमत रविडोलै तबहुँ नधीरज आवैजी ॥
अलक नासिका कर पदशोभा अलि शुक कमल लजावैजी ॥
लखि सकुचात रहत बन कहही कवि हमें बृथा बतावैजी ॥
दशनदमक दामिनी लजानी क्षण दुर क्षण प्रगटावैजी ॥ २ ॥

दोहा—सधर अधर लखि अरुणता, विद्रुम बिंबलजाय ॥
गगन रह्यो शशि वदन लखि, घटत घटत नितजाय ॥

चौ०-घटत घटत नितजाय कंठशुभ लखिअति मनसकुचाईजी ॥
रहत शंख जल माहिं छिपाई सकत न बाहिर आईजी ॥
बाहु देखि अहि बंबि समाने कटि लखि केहरि धाईजी ॥
जग गति गुलफ निरख सरमावै सकत न आंखि उठाईजी ॥१॥
दीनी पटतर मेटि मुरारी निज इच्छा वपुधारीजी ॥

अनुपम छबिकवि कहै कवन विधि बिन उपमा आधाराजी ॥
ब्रज तिय मोहन मन हरण हरि सुन्दर नन्दकुमाराजी ॥
अधर मनोहर वैन मधुर सुर बाजत सुखद अपाराजी ॥ २ ॥
दोहा-जल विहार करि बाल सब, तब निकसीं जल तीर ॥
जानु जंघ जललोंरहीं, चूवत अचरननीर ॥
चौ०-चूवत अचरन नीर परे तट दृष्टिहि कुँवर कन्हाईजी ॥
ठाढ़े कदम विटपकी छाईं अनुपम छबि दरशाईजी ॥
प्यारी निरखत रूप लुभानी मति गति सब विसराईजी ॥
दरशन हानि सही नहिं जाई लाज सखिनकी आईजी ॥ १ ॥
मनहिं ज्ञान करि यह अनुमानी आज लेहिं सखि जानीजी ॥
जान गईं सब अली सयानी जानहिं भईं अयानीजी ॥
बहुरो न्हान लगीं सब पानी कर रहिं आना कानीजी ॥
प्यारी कबहूं श्याम निहारे सखिन देखि जिय जानीजी ॥ २ ॥
दोहा-मेरीदिशि चितवत नहीं, न्हात सकल ब्रजबाल ॥
तब मन बात विचार यह, देखि लेहुँ नँदलाल ॥
चौ०-देखि लेहुँ नँदलाल बहुरि कब मिलिहैं नन्द किसोरेजी ॥
ललकि लगीं अँखियां हठि दोऊ चितवत हरिकी ओरेजी ॥
निरखत श्यामा श्याम छबीको होतनहीं मन थोरैजी ॥
नैन बदन सोभित मनु जैसे द्वै शशि चारु चकोरैजी ॥ १ ॥
रूप माधुरी अमिरस सोई पीवत दोउ मन लाईजी ॥
विवस भये आति मन दोउनके तृप्तहोत कोउ नाईजी ॥
यद्यपि सकुच सखिनकी आई तदपि रुकी नाराईजी ॥
उमँग गई सरिताकी नाई श्यामसिंधुके माईजी ॥ २ ॥
दोहा-भरीं सलिल अनुराग उर, लहर उमग उछाह ॥
भ्रमर मनोरथ परतहै, प्रेम सलील अथाह ॥

चौ०-प्रेम सलील अथाह तुरत कुल मर्याद अरार ढहाईजी ॥
लोक सकुच तरु तोर बहाये धीरज नाव न आईजी ॥
रहे थकित पल पथिक डराई इक टक धार लखाईजी ॥
मिली श्याम सोइ सिंधु अपारा सोसखियन लखिपाईजी ॥ १ ॥
कहत सखी सब आपुसमाईं दे दे सैन बताईजी ॥
देखोरी प्यारी उन माईं इक टक दीठ लगाईजी ॥
कालिह हमें कैसे निदरीहै बात याद सोइ आईजी ॥
देखहु अब देखतहै कैसी वे सब बात भुलाईजी ॥ २ ॥

दोहा-सुन्दर पियको रूप लखि, सुधि बुधि गई भुलाय ॥
इक टक हेरत श्यामतन, कहा बसी मन आय ॥

चौबोला-कहा बसी मन आय गई सुधि देखतही सुखदाईजी ॥
चित्र पूतरीसी ह्वै रहि है देह दशा बिसराईजी ॥
नागर नवल किसोर मनोहर उत वे रहेलुभाईजी ॥
प्यारी मुख दृगलाय रहे हारि नैन नहीं मटकाईजी ॥ १ ॥
औरै भाव भई सखि प्यारी बढ्यो प्रेम तरुआईजी ॥
गईतासुजर सप्तपताला पहुँच्यो शिखरहि जाईजी ॥
बचन पत्र अवलोकन शाखा छांह अभिलाषा छाईजी ॥
गुण बुधि सुमन सुगंधि निकाईं लगे आनंद सुहाईजी ॥ २ ॥

दोहा-पूरण आसन बनहिं को, फल श्री नन्दकुमार ॥
अरस परस दोऊ निरखि, तन मन धन रहेवार ॥

चौबोला-तन मन धन रहे वार तबहिंइक सखी कह्यो मुसकाईजी
प्यारी देखे कुँवर कन्हाई कहति मैं देखे नाईजी ॥
येही हैं सुन्दर सुखदाई जिनकी होत बडाईजी ॥
हमें कहतही मोहिं दिखावो देखिलेहु ठहराईजी ॥ ॥ १ ॥
बहुत लालसाही मन माईं ताहीते हरि आयेजी ॥

पूरी आश दरश तुम पाये हमहीं बोल पठायेजी ॥
राखो चीन्ह इन्हैं अवनीके ये सबके मनभायेजी ॥
भले शकुन आई तुम यमुना भये सो तुम मन चायेजी ॥ २ ॥
दोहा–अब कछु हमको देहुगी, मिले तुम्हें व्रजराज ॥
सखियनके सुनि वचनवर, तब उपजी कछु लाज ॥
चौबोला–तब उपजी कछु लाज कहतियहबातकछूइनजानीजी
मैं हरि तन लखि रूप लुभानी सोये देखि मुसकानीजी ॥
काल्हि कही इन सों मैं वैसे आजबनी यह आनीजी ॥
इन आगे मोबातनशानी अब करिहैं विन पानीजी ॥ १ ॥
मोही पर मेरी चतुराई परी उलट सकुचाईजी ॥
कहत सखिनसों ज्वाब न आवै तब मन हरिको ध्याईजी ॥
अहो श्याम सुन्दर सुखराशी मैं तुम हाथ बिकाईजी ॥
अब सहाय सुन्दर हरि कीजै लीजै लाज रखाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जाते मेरी पतिरहै, सो मोहिं देहु जनाय ॥
ऐसे हरिको सुमिर मन, तब इक बुद्धि उपाइ ॥
चौबोला–तब इक बुद्धि उपाइ प्यारीके यह आई मनमाईजी ॥
कीनो अति मनमाहिं हुलासा देहौं सखिन जनाईजी ॥
सखिन कह्यो अब घर चल प्यारी कहा अबेर लगाईजी ॥
ऐसे कहि कहि सब पछिताई कबकी न्हानें आईजी ॥ १ ॥
कियो दरश तुम श्याम सुन्दरको चल राधा घर माईजी ॥
चीन्हे रहो बहुरि तुम मिलियो यह कहि सब मुसकाईजी ॥
चली सदन तब नवल किसोरी अपर सखी समुदाईजी ॥
उरमें धरि व्रजनाथ नेम मन मुखते बोलति नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कहो प्यारी कैसे हरी, बूझति सखि इक आय ॥
भाये तेरे मन कछू, हैं सुन्दर कै नाय ॥

चौबोला—हैं सुन्दर कै नाय कहो फिर हमसों बात लुकाईजी ॥
कैमनकी अब बात जनैहो बूझति हम तुम पाईजी ॥
हम बरने जैसेरी प्यारी हैं हरि तैसे कि नाईजी ॥
कहति मनहिं वृषभानु दुलारी ये सब ख्याल न आईजी ॥ १ ॥
बातन बातन करत उघारो सब मनमें यह चावैजी ॥
मोको बातन मांझ भुलावै मोते चतुर कहावैजी ॥
ऐसे इनसों वचन बखानो इनपै ज्वाब न आवैजी ॥
मेरे शिर समरत्थ कन्हाई ये मोको कहा पावेजी ॥ २ ॥

दोहा—प्यारी पियके गर्वमें, अंग अंग सुख पाय ॥
मंद मंद तब हंसगाति, चलत ठठक रहजाय ॥

चौबोला—चलत ठठक रहजाय चरण नख छोलाति भूमिसुहाईजी
चितवत नहीं नेक कहुँ सूधे काहू तन अनखाईजी ॥
रही गर्व पिय श्याम सुन्दरके गर्बीली गरबाईजी ॥
क्यों प्यारी बोलत नहिं हमसों सखिन कह्यो मुसकाईजी ॥१॥
कियो मौन व्रत आज बहुरि तुम कै हमसों अनखाईजी ॥
कै कछु बात कही नहिं जाई कै मन हरो कन्हाईजी ॥
कबहूं जान पहिंचान न तेरी देख रही दृग लाईजी ॥
सांची बात कहो अब प्यारी परयो सोच कहा आईजी ॥ २ ॥

दोहा—कहा निहारति श्याम तन, इकटक नैन लगाय ॥
सखियनके सुनि वचन बर, तब बोली सुखपाय ॥

चौ०-तब बोली सुख पाय कहति कहा सखि तुम मोसों आईजी
मोसों कहति श्याम तुम देखे तुम कहा देखे नाईजी ॥
तुम तो बाहर जाकर देखे मैंतो रही जल माईजी ॥
तुमहीं हरिको रूप बखानो कहो मोहिं समुझाईजी ॥ १ ॥

१ अहंकार। २ नेत्र। ३ बात। ४ श्रेष्ठ।

केसे वरन भेष हैं केसे सब अँग देहु बताईजी ॥
तव इक सखी कह्यो मुसकाई ऐसे लखे कन्हाईजी ॥
छंद बंद हम जानति नाई सांच सबन मन भाईजी ॥
देखे हम नँद नंदन जैसे तैसेंहि देत बताईजी ॥ २ ॥
दोहा—श्याम शुभग तन पीतपट, चटकीलो द्युतिकारि ॥
सोभित घनपर दामिनी, जनु चपलई विसारि ॥
चौबो०-जनु चपलई विसारि मुरलिध्वनि गर्जत घन छविछाईजी
परमानन्द जलहिं मनु बरसत चितवत हरि मुसकाईजी ॥
विविध सुमन दलकी उर माला इन्द्र धनुष छवि पाईजी ॥
मुक्तावली बीच मनु राजत बाल मराल सुहाईजी ॥ १ ॥
अंग अंग छवि रूप मनोहर खडे कदमकी छाईजी ॥
उपजत है अँखियन अनुरागा देखत कुँवर कन्हाईजी ॥
लोचन सुभग नये छविछाजे पुतरी श्याम सुहाईजी ॥
मनहुँ युगल अलिभाग निवारे पिवत सुमन रस आईजी ॥ २ ॥
दोहा—रदहीरा अरु अधर बिंब, शुकनासा शुभकारि ॥
भ्रुकुटि धनुष अरु तिलक शर, मदन करत रखवारि ॥
चौबोला-मदन करत रखवारि शीशपर मोर चन्द्रसुखदाईजी ॥
काम शरन मन पक्ष लगाई गडत युवति मन पाईजी ॥
निकसत बहुरि निकासे नाईं उरही रहत समाईजी ॥
बारिजबदन मनोहर बानी बोलत सुधा मिलाईजी ॥ १ ॥
कुंडल झलक कपोल छवी अरु श्रमसीकरके दागाजी ॥
मानहुँ मनसिज मकर मिले दोउ क्रीडत सुधातडागाजी ॥
ऐसे सोभाके उदधि हरि भरे रूप रसरागाजी ॥
सो अवलोकत हरि वदन छवि धनि अँखियनके भागाजी ॥ २ ॥
दोहा—अंग अंग सुन्दर छवी, देखे कुँवर कन्हाइ ॥

कछु छल हम जानत नहीं, लखेसो बरने आइ ॥
चौबोला–लखे सो बरने आइ सांचही झूंठ करै जो कोईजी ॥
यह हम जानति सब मन माई सोवह झूंठो होईजी ॥
हमइतानिनमें नाहिं दुराऊ कहति यथारथ जोईजी ॥
यामाहिं कोऊ झूंठी मानें ताकी जाने सोईजी ॥ १ ॥
हमतो श्याम निहारे ऐसे तुम कैसे लख पाईजी ॥
अपनीसीगति सबकी जानूं यह मोहिं साँच न आईजी ॥
जिनको वार पार कछु नाहीं सो किम परत लखाईजी ॥
धनि धनि तो ये नैन तुम्हारे जो तुम लखे कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मैं लखि इक अंगहि रही, हगन नीर भरि आय ॥
कुंडल झलक कपोलछबि, रहीचकित लखिताय ॥
चौबोला–रही चकित लखिताय मूंदरही नैनन कछु लखि पाईजी
पहिंचाने नहिं नेक कन्हाई भरयो नैनजल आईजी ॥
मैं तबते अपने मनमाईं यहै रही पछिताईजी ॥
देखनको छबि श्याम सुन्दरकी चहियत नैन निकाईजी ॥ १ ॥
उमँग चलत तापर सलिलही अति छबि अँखिया दोईजी ॥
सखी श्यामके रूप शुभगको कैसे दरशन होईजी ॥
द्वै लोचन तुमरे द्वै मेरे मोहिं लखात न कोईजी ॥
तुम प्रति अंग विलोकन कीनो मैं नीके नहिं जोईजी ॥ २ ॥
दोहा–भोजनको दुख पात कोउ, खटरसकाउ नभाय ॥
जो बोवै सोई लुनै, अपने भाग्य निकाय ॥
चौबोला–अपने भाग्य निकाय जैसेही रंक तनकधन पाईजी ॥
होत निहाल आपने भाये रहत मगन मन माईंजी ॥
मोहिं तुम्हें अंतर है भारी धनि तुम लखे कन्हाईजी ॥
तुम हरिकी संगिन ब्रजनारी ताते दरश दियो आईजी ॥ १ ॥

आपहिं निंदति हमें बड़ाई कहा कहति सखि प्यारीजी ॥
आपन भई रंक¹हरि धनको हमें कहति धनवारीजी ॥
हम हरिकी संगनि सब ग्वारी आपन निर्मल² न्यारीजी ॥
धनि धनि धनि वृषभानु दुलारी धृक धृक बुद्धि हमारीजी॥२॥
दोहा—धनि धनि तेरे मात पितु, धन्य भक्ति धनिहेत ॥
तैं पहिचाने श्यामको, हमसब ग्वारि अचेत ॥
चौबोला—हम सब ग्वारि अचेत धन्य तू धनि वृषभानुकिशोरीजी
हर्षि कहत सब गोप कुमारी अचल रहो यह जोरीजी ॥
जैसो तैं हरि रूप बखान्यो है तैसो सुन गोरीजी ॥
देखनको हरि रूप उजेरी आंखि चाहिये तोरीजी ॥ १ ॥
तैं जु कही लोचं³न भरे सो गये हरि दृगन समाईजी ॥
अति पुनीत स्थल शुभजानी कियो बास तहाँ आईजी ॥
वास कियो हरितो दृगमाईं और बात कछु नाईंजी ॥
ऐसे श्याम संग ब्रजबाला गावत गुण सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तहाँ श्याम आये पुनी, नटवरभेषवनाय ॥
मुरली अधर सुहावही, कल⁴ ध्वनि मधुर बजाय ॥
चौबो०-कलध्वनि मधुरबजाय करत रही जो मनध्यानकन्हाईजी
सोई अंतर्यामी जानी दिये दरश तहाँ आईजी ॥
भावाधीन सकत रहनाईं गये तिरछे मगमाईजी ॥
तरुतमालतर तरुण कन्हाई ठाढे भये सुखदाईजी ॥ १ ॥
थकित भईं सब ब्रजकी बाला देखि रहीं गोपालैजी ॥
रतन जटित पग पाँवँरिसोहै नूपुर मंद रसालैजी ॥
चरण कमल दल निकटहिमानो बैठे बाल मरा⁶लैजी ॥
जनु मणि व्योम⁷ प्रकाश कियो है उदित चंदनखलालैजी ॥२॥

१ दरिद्री। २ उज्ज्वल। ३ नेत्र। ४ सुंदर। ५ खडाऊं। ६ हंस। ७ अकास।

दोहा–विरहताप ब्रजतिय हरण, सुर नर मुनि सुखदाइ ॥
मनहुँ काम शत छबि किये, युवतिनके मन भाइ ॥
चौबोला–युवतिनके मन भाइ जंघ छबि युगल अनूपसुहाईजी
रंभा खंभनहू विपरीता अति छबि वरनि नजाईजी ॥
कंचन दंड एक लपटायो एकरहे भूलाईजी ॥
तनुत्रिभंगकी लटक सुहाई लखि युवती सुखपाईजी ॥ १ ॥
ब्रजयुवती हरिपद मनलावै निरखति छबि मनभाईजी ॥
कुलिशांकुशध्वज चिह्न निकाई निरखतिइकटकलाईजी ॥
मनहूँ सुखमाकरत विहारा पंकज अरुण सुहाईजी ॥
कटिकेहरि जिमि परम अनूपम सो छबि कहत न आईजी॥२॥
दोहा–तापर सोहै मेखला, जटित मणिनकी माल ॥
बैठे पंकति जोरि मनु, बालक सहित मराल ॥
चौबोला–बालक सहित मराल मदनको कीधो सदनसुहायोजी
बांधी बन्दनवारि बनाई ब्रजतिय लखि सुखपायोजी ॥
नैनन पलक परन नहिं देही निरख रही टकलायोजी ॥
नाभि गंभीर सोहत मनु जैसे मदन तडाग बँधायोजी ॥ १ ॥
जनु शृंगारको बाग रोमावलि तटपर परम सुहाईजी ॥
सोभा नाभि गँभीर कि अति छबि ब्रज तिय लखि हरषाईजी ॥
मन नहिं सकत निकासि परचो दह अतिशय गहरे माईजी ॥
उदर उदार कहत नहिं आवै रोमावलि छबि छाईजी ॥ २ ॥
दोहा–रही अटकि छबि निरखि सब, परख रही मन लाय ॥
कोउ कहति शर कामको, कोउ कह कही न जाय ॥
चौ॰ कोउ कह कही न जाय मनहुँ अलि बालक पांति बनाईजी ॥
जुरबैठे सब एकहि भांती सोभित छबि अधिकाईजी ॥
नीरद नील कोऊ कह सूक्षम धूम धार छबि छाईजी ॥

मर्कत गिरि उरते प्रगटाई कहति यह रबिकी जाईजी ॥ १ ॥
जाति नाभि ह्रद अगम अपारा उदर भूमि सोइ धारीजी ॥
दुहुँ दिश फेण स्वाति सुत माला उपजत लहर सुखारीजी ॥
सोभा तर न सकत ब्रजनारी रही विचार विचारीजी ॥
उर मुक्तनकी माल बिराजै कौस्तुभ मणि विचभारीजी ॥ २ ॥

दोहा–शशिहि बेरि बैठे जनुः, निर्मल नभ उडराय ॥
भृगु पदरेखा श्याम उर, मनु शशि मेघ समाय ॥

चौ०-मनु शशि मेघ समाय नाना रंग सुमन माल उर छाईजी॥
प्रफुलित हैजनु छबिकी बेली मनु तरु चढी सुहाईजी ॥
कंबु कंठ मणि कंठहि सोहै छबि बरनी नहिं जाईजी ॥
हरि उर भर सोभा निहारि सब ब्रजतिय रही लुभाईजी ॥
वृषभ कंध भुज दंडहिं मानो गजाहिं सुंडि लटकारीजी ॥
कर पल्लवन मुद्रिका सोहै बाहु विभूषण धारीजी ॥
जनु शृंगार विटपकी डारी फूल रही छबि भारीजी ॥
हरि मुख निरखत गोप कुमारी डारति तन मन वारीजी ॥ २ ॥

दोहा–कहति परस्पर सुन सखी, देखहु मुख छबि आइ ॥
चिबुक चारु अरु अधर अरुण, पान रेख छबिछाइ॥

चौबोला–पानरेख छबिछाइ हँसन दुति मंदहिं दशन निकाईजी॥
उपमा कापैजात बताई अति छबि कहत न आईजी ॥
अनुपम छबि चितलेत चुराई सब सखियन मन भाईजी ॥
मानहुँ मुकुर नीलमणि कीने गोलकपोल सुहाईजी ॥ १ ॥
बाजत मुरली करकी फेरन मधुरे सुर सुखदाईजी ॥
चंचल नयन चपल गति हेरन अति छबि बरनि न जाईजी ॥
मणि कुंडल डोलन प्रतिबिंबन मुकुर कपोलन छाईजी ॥
सो छबिकापै जात कही लखि तियविन मोल विकाईजी ॥२॥

दोहा–सुभग नासिका चपल दृग, कुटिल भ्रुकुटिकी रेख ॥
जनु युग खंजन बीच शुक, उड न सकत धनु देख ॥
चौबो०-उड़ न सकत धनु देख अमित छबि घुंघरारेकच श्यामेजी
कोटि काम सोभा हरण हरि शीश मुकुट अभिरामैजी ॥
दुहुँकर अधर मुरलिका बाजै रूप सुधानिधिकामैजी ॥
मानहुँयुगल कमल पटमाई भरत सुधा शशिधामैंजी ॥ १ ॥
हरि मुख निरखतनैन लुभाने तृप्त न कोऊ होवैजी ॥
श्याम सुभगतनु चित्रत चंदन ब्रजवनिता सब जोवैजी ॥
कनक बरन पट पीत विराजै देखि सखिनमन मोवैजी ॥
निर्मलगगन शरदघन माला तापर दामिनि सोवैजी ॥ २ ॥
दोहा–अंग अंग सुन्दर छबी, निरखति ब्रजकी बाल ॥
मुकुट लटक लखि कोउरही, कोउ लखि चंदन भाल॥
चौ०–कोउ लखि चंदन भाल अलक कोउ निरख रही चित लाईजी
कोउ लखि भ्रुकुटी सुरत बिसारी अति छबि चंचल ताईजी ॥
कोउ लोचन छखि लखि ललचानी कोउ चितवन उर झाईजी ॥
कोऊ कुंडल झलक लुभानी लखिकपोल सुख पाईजी ॥ १ ॥
कोउ नासा कोउ अधर निकाई कोउ रद लखि सुख चीनैजी ॥
कोउ बोलन कोउ मंद हँसनि पर कोउ मुरली ध्वनि लीनैजी ॥
कोउ मुरली पर ग्रीव कोऊ रही लटकन पर आधीनैजी ॥
चारु चिबुक अरु ग्रीव उरहि लखि भइ युवती परवीनैजी ॥ २ ॥
दोहा–थकीं निरखिजहँ सो तहाँ, हरि मुख सोभा सीर ॥
कोउ सुन्दर उरबाहु पर, लख सखिभई अधीर ॥
चौ०-लखि सखि भई अधीर निरख थकि भूषण लाज अपारीजी
कोउ कटि कोउ पट पीत निहारी जंघ गुल्फ बलिहारीजी ॥
युगल कमल पद नखकी छबिपर बिहारन तन मन वारीजी ॥

हरिप्रति अंग निरख ब्रजनारी तनुकी सुरत बिसारीजी ॥ १ ॥
शशि मुख लखि जनु कुमुदनि फूली अति आनँद रह्यो छाईजी ॥
किधौं चकोर रहे टक लाई पीवत शीतलताईजी ॥
कैरवि कुंडल छबिहि निहारी बिकसत कमल निकाईजी ॥
कै चकई गण मन सुखपाई निरखति राति हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कैधौं नव घन तन छबी, भइ चातक सब बाम ॥
कैमुरली ध्वनि सुनि मृगी, लखति युवतियम श्याम ॥

चौ०-लखति युवतियम श्याम हरी छबि अरुझन मन अरुझानीजी
सुरझनसकति युवति बितताननी सब हारि रूप समानीजी ॥
रूपराशि सुखराशि कन्हाई प्रेमराशि सुखदानीजी ॥
छबिसागर सुखकी अवधि हरि गुणमंदिर रसखानीजी ॥ १ ॥
मोहि लियो मन सकल तियनको रसिक नरेश कन्हाइजी ॥
प्यारी २ नामहिं कहि कहि मुरली मधुर बजाईजी ॥
गये सदन आनंद कन्हाई अनुपम छबि दरशाईजी ॥
रहीं ठगीसी गोपकुमारी लेगये चित्त चुराईजी ॥

दोहा—धन्य धन्य राधा कुँवरि, कहति सकल मिलवाम ॥
वड़भागिन तोसीनहीं, तेरेही वश श्याम ॥

चौबोला—तेरेही वश श्याम धन्य तू धनि तोको हरि चावैजी ॥
धनि जोरी धनि प्रीति ललामा धनि तू हरि मनभावैजी ॥
एक प्राण द्वै देह तुम्हारी न्यारे होन न पावैजी ॥
तोको देखि श्याम सुखपावै तेरोई गुण गावैजी ॥ १ ॥
तेरी प्रीतिं साँच हरिं जानी तेरे वश गिरिधारीजी ॥
मन वच क्रम निर्मल तू प्यारी धृक धृक बुद्धि हमारीजी ॥
जैसे घट पूरण नहिं डोलै होत अवधि डुलभारीजी ॥
राख्यो परखि हृदय हरि हीरा परम सुघर तू नारीजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनि सुनि वाणी सखिनकी, प्यारी मनअनुराग ॥
पुलकि रोम गद्गद हियो, समुझि आपनेभाग ॥
चौबोला–समुझि आपने भाग लाडिलीमनमनअतिहरषाईजी ॥
प्रीति प्रगट चाहती कियो कछु वचन कह्यो नहिं जाईजी ॥
बाहर दुरत प्रकाश नहीं यह हरि उररहे समाईजी ॥
सुनहु सखी तुम करत बडाई सुनि सुनिमैं सकुचाईजी ॥ १ ॥
हरिको भले परखि पहिचान्यो कहति मोहिं तुम आईजी ॥
कैसे हरि पहिचाने जाई यहै सोच मनमाईजी ॥
नैनदिये छवि अगम अगाधा पलकहोत दुखदाईजी ॥
क्षणहीं में भर आवत पानी हरि किमि जाने जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बिन पहिचाने कौन विधि, करों श्याम सों प्रीति ॥
नहिं वह रूप न भाव वह, क्षण क्षण औरै रीति ॥
चौबोला–क्षणक्षण औरै रीति जानलई है हरि अतिसुखदाईजी ॥
कहो करो द्वै लोचन तेरी पहिचाने नहिं जाईजी ॥
वड़ो कूर विधना यह आली समुझी लखत कन्हाईजी ॥
कँरपद उर ग्रीवा कटि दीनी मुख रँद नाक बनाईजी ॥ १ ॥
भाल शिखर नख केश बनाये अधर अरु जीव सुहाईजी ॥
रोम रोम प्रति नैन नदीने अंग छवि खूब बनाईजी ॥
जो ब्रज दीनों जन्म हमारो देखन कुँवर कन्हाईजी ॥
तो कत नैन दिये शठ दोई विधिते निठुर कोउ नाईजी ॥२॥
दोहा–विधनामैं पाऊं कहूं, औरै सृष्टि चलाय ॥
रोम रोम प्रति नैन करि, पलकपरन नहिंपाय ॥
चौबोला–पलक परन नहिं पाय तबहिं कछु होवे मनकीचाईजी
होय मनोरथ पूरण मेरो निरखों कुँवर कन्हाईजी ॥

---

१ स्नेह। २ अथाह। ३ हाथ। ४ दाँत। ५ बाल।

हरि स्वरूप सखि जान न जाई वह छबि नैन समाईजी ॥
मैं पचिहारि रही बहुतेरो नेक न देखन पाईजी ॥ १ ॥
दुरत दुराये कौन विधी सखि अब तुमसों यह बातेजी ॥
देखे विन नँदनन्द सखीरी धीरज धरत न गातेजी ॥
इन नैननके संग लग्यो यह उड़चो फिरत दिन रातेजी ॥
आक रुई जिमि बात बशहि सखी क्षण नहिं मन ठहरातेजी ॥
दोहा–जबते हरि मूरति लखी, तबते रहि पछिताय ॥
संग रहौं दरशन करौं, पुनि पुनि यह मनचाय ॥
चौबोला–पुनि पुनि यह मनचाय सखीरी मोमनमें अब आईजी॥
निकट जाय हरि छबिहि निहारौं सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
तब प्रतिबिंब मेरोई आई होत मोहिं दुखदाईजी ॥
मेरे मन हरि मुरति समाई बिन देखे न सुहाईजी ॥ १ ॥
सखी दोषनहिं काहू केरो यह सब श्याम करावैजी ॥
नीके दरशन कबहुँ न देही नइ नइ छबि दरशावैजी ॥
चपलाहू तेचपल घनेरी दशन दमक छबि छावैजी ॥
कबहूँ अंगन मुकुर बनावै कोटि अनंग लजावैजी ॥ २ ॥
दोहा–मगन दरश लखि लाडिली, पुनि पुनि पुलकित गात ॥
तृप्त न मानति देखिछबि, कहति लखे नहिं जात ॥
चौ०–कहति लखे नहिं जात सखिन तब यह निश्चय करि पाईजी ॥
रोम रोम याके रमे हरि सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
कहति धन्य प्यारी बड़भागी तैं जाने सुखदाईजी ॥
तूहै नवल नवल हरिवेऊ भरे रूप गुण माईजी ॥ १ ॥
तू हरिकी अर्धंगिन राधा यह मोहिं परत लखाईजी ॥
मिले तोहिं करि कृपा कन्हाई दीने दुःख मिटाईजी ॥
कहैं बने यह बात नकाची साँची देहु सुनाईजी ॥

छाँडि देहु अब यह चतुराई कहा मिले तोहिं कन्हाईजी ॥२॥

दोहा–खरक मिले कै कुंजबन, कै दधिवेचति जहाँइ ॥
के जब उरग डसी तबै, कैसे प्रीति लगाइ ॥

चौबोला–कैसे प्रीति लगाइ बात यह सखियन दई सुनाईजी ॥
बोली परम नागरी बानी मैं यह जान न पाईजी ॥
सुनहु सखी मैं सांच बखानों कहाँ मिले कुँवर कन्हाईजी ॥
दधि बेचत कै खरक मँझारी गृह बन मुहिं सुधि नाईजी॥१॥
आजकि काल्ह कहौ कहा आली कियो बास उरमाईजी ॥
नैननते क्षण टरतनहीं हैं नीके लखे नजाईजी ॥
यह अचरजकी बात सखीरी कहा कहों तुम पाईजी ॥
मिलहिं मोहिं जब कुँवर कन्हाई याते कौन भलाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मैं यमुना भरने गई, औचक देखे श्याम ॥
तबते मनमेरोहरचो, करिकै उरमें धाम ॥

चौबोला–करिकै उरमें धाम मोहिं तन चितै रहे मुसकाईजी ॥
कहा कहों सखि नैन निकाई वह छबि कहत न आईजी ॥
उन मुसकान मोहनी लाई मैं लखि दशा भुलाईजी ॥
सिथिल अंग भये तबहीते मैं उन हाथ बिकाईजी ॥ १ ॥
सूधो मारग गई भुलाई ज्योंत्यों करि घर आईजी ॥
तादिनते अँखिया यह मेरी रहीं श्याम सँगजाईजी ॥
बंसी बजीजाय बनमाई वह छबि बिसरत नाईजी ॥
वह चितवन कछु जानिन जाई नैन न माहिं समाईजी ॥ २ ॥

दोहा–नहिं जानति हरि कहा कियो, मंद मधुर मुसिकाय ॥
मन समुझति रीझति नयन, मुख कछु कह्यो नजाय॥

चौबो०-मुख कछु कह्यो नजाय कहा कहुँ तबते कछु न सुहाईजी
अवलोकन हरि विधु बदन सखी अमल परचो दृग आईजी ॥

निकसे सखी एक दिन आई हमरे द्वार कन्हाईजी ॥
मैं ठाढीही अजिर अकेली देखि छवी सुख पाईजी ॥ १ ॥
सुभग भ्रुकुटि विच बंक मरोरै चंचल नैन चलायोजी ॥
फेरत कमल कमल करमाई लखि छबि मदन लजायोजी ॥
मोहित लाग भये तहँ ठाढे कछुक भाव दरशायोजी ॥
पीताम्बर निज शीश फिरायो लेकर भाव लगायोजी ॥ २ ॥

दोहा–मैं मुखते बोली नहीं, गुरुजनको डरमान ॥
आये तेरे प्रेमकर, वैसेहि दीने जान ॥

चौबोला–वैसेहि दीने जान तूतो अति चतुर हतीरी नारीजी ॥
सेवा कछूकरी नहिं प्यारी कहा जिय माहिं विचारीजी ॥
गुप्त भाव तोसों हरि कीनों घर आये बनवारीजी ॥
उन पीताम्बर शीश फिरायो कहा मौन रही धारीजी ॥ १ ॥
तैं कछु उत्तर तिन्हें न दीनों आये घरहि कन्हाईजी ॥
कहा करौं गुरु जनरी आली भये मोहिं दुखदाईजी ॥
सकुचरही तिनकी सकुचानि मैं मुख कछु कहन न पाईजी ॥
इतनो कियो सयान सखीमैं वेदी सों कर लाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सन्मुख करि करि आरसी, हितकर उरसों लाइ ॥
अन्तर्यामी श्याम वे, जान लई चतुराइ ॥

चौबोला–जान लई चतुराइ आपहँसि निजशिर पेचलगाईजी ॥
रहे हस्त हिरदे परधारी चितै रहे मोमाईजी ॥
मोते सखि न कछू बन आई मेरो कहा वसाईजी ॥
नयो नेह उत गुरुजन घेरो रही देखि मन लाईजी ॥ १ ॥
दियो कमल उर आसन हरिको मन आनंद अपारीजी ॥
उमगि कलसकुच प्रगट भयेरी मैं मन लाजति भारीजी ॥
टूट कंचुकी बन्द गयेरी समुझी करनी सारीजी ॥ २ ॥

दोहा–सोमैं मंगल मानि मन, ऐसी मति भइ आइ॥
अति सुख मानि गये हरी, तबते कछु न सुहाइ॥
चौबोला-तबते कछु न सुहाइ कहति सखी सुनरी राधा प्यारीजी
सेवा मान लई हरि तेरी जिनकर सोच विचारीजी॥
नीके कीन्हे भाव सकलतैं तू अति नागरि नारीजी॥
उन लीन्हें सब भाव जानकै वे अति चतुर मुरारीजी॥ १॥
भावहिको सन्मान चाहिये गुरुजन सबन मझारीजी॥
गये श्यामहित मान लाडिली अब चाहति कहा प्यारीजी॥
हम यह बात भलेकर पाई तेरेहि वश गिरिधारीजी॥
तैं बेंदी उन पेच सँवारे उन तुम तुम उन ज़ुहारीजी॥ २॥
दोहा–मिली आरसी में उन्हें, उन उर धरि करलाय॥
एक प्राण द्वैदेह तुम, भेद न कोऊ पाय॥
चौबोला–भेद न कोऊ पाय कहौ किन है मोहन सुखदाईजी॥
अँखियां रहत दरशकी प्यासी वह मूरति मन भाईजी॥
कमलनैन कर वेणु सुहाई निकसत जब इत आईजी॥
ना जानिये सखी तिहिं काला सबतन रहत लुभाईजी॥ १॥
सुरत शब्द प्रतिरोम समाई देखनकी मन माईजी॥
चितै रहत चित्रत ज्यों नैना समुझत बैनानाईजी॥
कै दुख सुख कै संभ्रम अपनो सांच कि यह स्वपनाईजी॥
कहा करौं गुरु जन डर भारी मैं उन हाथ बिकाईजी॥ २॥
दोहा–जबते दीनो श्याम मुहि, द्वारहि दरशन आय॥
तबतेमन अपनो कियो, अब मुहिं कछु न सुहाय॥
चौबो०-अब मुहिं कछु न सुहाय भावते आये हरि सुखदाईजी॥
मैं कछु सेवा कर न सकीरी गुरुजन को डर पाईजी॥
यहै चूक जिय जानहिं मेरो मन हर लियो कन्हाईजी॥

पाऊँ फेरि कवन विधि आली अब मैं रहि पछिताईजी ॥ १ ॥
जबते प्रीति श्याम सों कीनी तबते नींद न आईजी ॥
फिरत सदा चित चक्र चढ्योसो रहतसोच हिये माईजी ॥
मिलहिं कवन विधि कुँवर कन्हाई यहै विचार रहाईजी ॥
पशु वेदन ज्यों आपहि सहिये कहिये कासों जाईजी ॥२ ॥

दोहा—तू प्यारी हरि रँगरची, तोते चतुर न कोउ ॥
साँच कहत अबतोहिं हम, भये एक तुम दोउ ॥

चौबोला—भये एक तुम दोउ लाड़िली अब बाकी कछु नाईजी
कहौं बात मैं रेखा खांची यामें फेर न राईजी ॥
तैं उनको मन प्रथम चुरायो तब तोहिं हरि अपनाईजी ॥
नन्दनँदन वर तू पटरानी अबकाहे पछिताईजी ॥ १ ॥
तोसी और कौन बड़भागी तैं हरिको वशकीनैजी ॥
विलसौ श्याम संग सुखमानी पाये फलसोइ दीनैजी ॥
श्याम करी सखि मोहिं बावरी मन कर लियो अधीनैजी ॥
वंसी ज्यों बाजी पलक यह अटके मोदृगमीनैजी ॥ २ ॥

दोहा—मन मेरो २ नहीं, अब मोहिं कछु न सुहाय ॥
रूप ठगोरी डारि शिर,मिल्यो श्याम अपनाय ॥

चौबोला—मिल्यो श्याम अपनाय. तोहिंमैंबारबारसमुझाईजी ॥
तेरे मन यह बात न आई कही सो तोहिं सुनाईजी ॥
अपनीसी बुधि जानत मेरी मैं इतनी कहा पाईजी ॥
देखतही हरि रूप लुभानी सुधि बुधि सब विसराईजी ॥ १ ॥
गद्गद वचन श्याम रस पागी प्यारी मन सुखमानीजी ॥
मन हर लियो छैल दधिदानी यहै कहति मुख बानीजी ॥
तब इक सखी सखी सों बोली तू कत होत अयानीजी ॥
गुप्त बात इन प्रगट न कीनी पुनि पुनि मन निदरानीजी ॥२॥

दोहा—हमसों प्रगट न करत सो, रहत श्याम सँगमाहिं ॥
ओट किये हम सों रहत, कहत बात मुख नाहिं ॥

चौबोला—कहत बात मुख नाहिं भये वश याहीके सुखदाताजी ॥
वे खोटे उनते यह खोंटी कीनी जोट विधाताजी ॥
कहत सखी तू यह कहारी निपट गँवारी बाताजी ॥
को प्यारी सम और दूसरी ताके वश बल भ्राताजी ॥ १ ॥
यह सब ब्रजमें अधिक शिरोमणि रूप शील गुण धामाजी ॥
धन्य न याते और नजाके दृढ व्रत हरि अभिरामाजी ॥
प्रीति गुप्तही कीहै नीकी कहा जानों तुम बाताजी ॥
क्यों खोटी जो हरिकी प्यारी जाके वश घनश्यामाजी ॥ २ ॥

दोहा—कोटि मदन मोहै हरी, सो याको मुख जोइ ॥
जैसे वे तैसी यह, यामें भेद न कोइ ॥

चौ०-यामें भेद न कोइ सुन्दर यह जोरी अति छवि भारीजी ॥
नागर नवल नवलके नागर श्यामा श्याम मुरारीजी ॥
एक प्राण द्वे तनु इन धारे लीला करन विचारीजी ॥
सोवत जागत जान हमारे येनहिं हरिते न्यारीजी ॥ १ ॥
पूरब नेह नयो यह नाई समुझ सखी मनमाईजी ॥
इनसों भाव प्रीति करलीजे मेरे मन यह आईजी ॥
बिनाप्रीति ये जाने नजाई प्रीति करो मन लाईजी ॥
ज्योंजन इनसों प्रीति नमाने जगमें जिवत वृथाईजी ॥ २ ॥

दोहा—सखी वचन सुन सखिनके, भयो हिये अति चैन ॥
धन्य धन्य ताको सबै, कहति सप्रेम सुबैन ॥

चौ०-कहति सप्रेम सुबैन धन्य सखी तू हमते बडिज्ञानीजी ॥
कहति बात कछु औरहि सों यह हम सब निपट अयानीजी ॥
येब्रज आय गुप्त प्रगटाने हम अब ये सब जानीजी ॥

श्यामा श्याम एकहैं एरी यह निश्चयकर मानीजी ॥ १ ॥
ये दोउ एक दूसरी तूरी तेरी प्रीति पुरानीजी ॥
तेरी इनसों प्रीति तबैते प्रीति पुरातन जानीजी ॥
धनि धनि श्याम धन्य तू श्यामा सहज रूप गुण खानीजी ॥
सहज एक दोऊहैं देही श्याम राधिका रानीजी ॥ २ ॥

लावनी।

देखि दोउनकी प्रीति विसाला भई विवस सब ब्रजबाला ॥
बसे हियेमें दिवस निश भानुसुता अरु नँदलाला ॥
टेक–सोवतते मानहुँ सब जागीं रंगी श्यामके रँग माई ॥
दूर गई सब दुबिधा मनकी बसी प्रीति हिरदे आई ॥
लाज संक मर्यादा लोपी भई युगल रस वश माई ॥
अटके नैना रूप रस वश भई तनकी सुधि नाई ॥
और कछू सों मन नाहिं लावें रटत युगल रस ब्रजबाला
बसे हियेमें० ॥ १ ॥
नागर नवल श्याम श्यामाके प्रेम मगन सब ब्रजनारी ॥
नैन नासिका श्रवण रसना अंग प्रति दोउन धारी ॥
उठत बैठत चलत सोवत जागत निशि वासर नारी ॥
बिसरत नाहीं एक पलक मनते राधा श्रीगिरिधारी ॥
युगल प्रेम रस सकल लीन भई गई सदन निज निज
बाला ॥ बसे हियेमें० ॥ २ ॥
जैसे जल अरु मीन एकहू घरी बिछुर सकती नाई ॥
बिना निहारे न परत कल रहे श्याम उरमें छाई ॥
गुरुजन त्रास दिखावत भारी सो न कछू मनमें ल्याई॥
गृहकारजकी सुरत बिसारी सास ननद मारन धाई॥

वे कछु कहैं करै कछु औरहि देख रहे गुरुजन हाला ॥
बसे हियेमें० ॥ ३ ॥
कहैं यदपि तुम माता जैसी तैसी तुमको सिखराई ॥
सुधि बुधि अपनी कहाहिराई कहा तुमरे मनमें आई ॥
कहांलगि कोऊ तुम्हें समुझावै वहु विधि तुमको समुझाई ॥
निडर भईहौ यमुनते तबते अब तुम घर आई ॥
विहारन सकल सखिनके मनमें दीखत गुरुजन जंजाला।
बसे हियेमें दिवस निशि भानुसुता अरु नँदलाला ॥ बसे हियेमें० ॥ ४ ॥

दोहा—तुम राधाको सँग करो, यह सब उन्हें सुहाय ॥
बड़े महरकी सुता वह, घर घर यह कहवाय ॥

चौबोला—घर घर यह कहवाय ऐसेही तुमहूं नाम धरावौजी ॥
सब गोपनपै यह कहवावो कहा यामें तुम पावौजी ॥
उनको सब उपहास करति हो तुम हरि सँग किम जावौजी ॥
ऐसे चलो होय नहिं हासी जिन ब्रज लोग हँसावौजी ॥ १ ॥
हम अहीर ब्रजपुरके बासी करत लोक कुलकानीजी ॥
फूंकि फूंकि धरणी पग धरिये लेहु सीख यह मानीजी ॥
सुनत बचन युवती गुरुजनके रही मौन मन आनीजी ॥
हरि राधा उपहास कि महिमा नाहिंन कोऊ जानीजी ॥ २ ॥

दोहा—जैसी मति जाके हिये, करत तैसिते बात ॥
रविको तेज न मानहीं, सुख उलूकही रात॥

चौबो०—सुख उलूकही रात विषहिको कीट विषहि रुचिमानेजी॥
कहा स्वाद रस स्वादहि जाने देख्यो नाहिं कछु तानेजी ॥
ये अहीर इनको प्रिय गोधन और न कछु मन आनेजी ॥

१ अभय। २ पुत्री। ३ हँसी। ४ पृथ्वी। ५ घूघू पक्षी। ६ कीड़ा।

जिनके गुण मुनि गर्ग बखाने ये महिमा कहा जानेजी ॥ १ ॥
धनि धनि राधा कुँवरि सयानी मिली श्याम सों प्यारीजी ॥
श्याम कामके पूरनहारे पुरिहैं आश तिहारीजी ॥
यह रस लीला ब्रज विस्तारी धनि श्यामा बनवारीजी ॥
करत श्याम श्यामा गुणगाना ऐसे गोपकुमारीजी ॥ २ ॥

दोहा–रोम रोम हरिरम रहे, रही सदन निजजाय ॥
नेकहु मन लागत नहीं, हरि बिन क्षण न सुहाय ॥

चौ०–हरि बिनक्षण न सुहाय मनहिं मन गुरुजन परखि जराईजी
इन विमुखनको संग न कीजे यह मन माहिं उपाईजी ॥
कौन भाँति करि इनसों छूटों निरखों कुँवर कन्हाईजी ॥
कैसेहु हरि बिन रहो न जाई बार बार अकुलाईजी ॥ १ ॥
धृक लज्जा धन धाम सबहि धृक मात पिता सुत भाईजी ॥
धृक जीवन है बहुरि दिननको विन श्री कुँवर कन्हाईजी ॥
विहारन प्रभु दरशन विन तिनको पलक कलप समजाईजी ॥
मन हर लियो श्याम प्यारीको सदन न नेक सुहाईजी ॥ २ ॥

अथ बाटके मिलनेकी लीला ॥

दोहा–भानकुँवरि श्रीराधिका, कृष्ण प्रेम रसछाइ ॥
तन घर मन हरि पासही, दुरत न प्रेम दुराइं ॥

चौबोला–दुरत न प्रेम दुराइ यमुन जल आपाहि भरन सिधाईजी
दृगन श्याम दरशनकी आशा मनहिं विचारत जाईजी ॥
चितको चोर अबहिं जो पाऊं तो संताप नशाईजी ॥
राखों बाँधि हृदय सों लाई भुजकी दाम बनाईजी ॥ १ ॥
जैसे लियो चोर चित मेरो उनको लेहुँ छिनाईजी ॥
छांडों नाहिं करै जो कोटी यह मन माहिं उपाईजी ॥

इतते प्यारी यमुना जावे उत आवत सुखदाईजी ॥
नील जलजतन सोभित आछे नटवर भेष सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा—दूरहिते जाने हरी, जीवन प्राण मुरारि ॥
रही मनोहर वदन लखि, कोटि काम बलिहारि ॥
चौ०—कोटि काम बलिहारि पुलकतन भइ आनँद मन प्यारीजी॥
बोली गद्गद वचन मुखहिते तनु विहवल न सँभारीजी ॥
चित चोरे कहां जात कन्हाई मैं तुम्हें ढूंढत हारीजी ॥
कहां सीखे यह बात मुरारी अहो छैल गिरिधारीजी ॥ १ ॥
जानत जैसे माखन चोरी तब बातें कछु ओरीजी ॥
बालकहते कान्ह तब तुमहूं हमहुँ हती जब भोरीजी ॥
मुख पहिचान जान तब देती देखति यशुमति वोरीजी ॥
गोरस काज कानि नहिं तोरी बसे बास इक ठोरीजी ॥ २ ॥
दोहा—अब भये कुशल किसोर हरि, हम सब भइ तरुणाइ॥
बरजोरी अब करत तुम, चोरतहो चितआइ ॥
चौबोला—चोरतहो चितआइ कन्हाई सुनहु श्याम रँगभीनेजी ॥
नख शिख अंग चोर यह तुम्हरो हमरो मन धनछीनेजी ॥
भुजा पकरि ठाढे हरि कीने जात कहां मन लीनेजी ॥
तुमको हम नीके कर चीने बानि हैं अब मन दीनेजी ॥ १ ॥
ब्रज में ढीठ भये तुम डोलत बोलत सूधे नाईजी ॥
जानलई तुम्हरी चतुराई सुनहु श्याम सुखदाईजी ॥
विना दिये मग जान न पैहो मेरे वशपरे आईजी ॥
प्यारीयों झगरत पिय पाई देह दशा विसराईजी ॥ २ ॥
दोहा—बकसि नागरी चूक यह, कहो मोहिं समुझाय ॥
चूक परी हमते बड़ी, चित ले गये चुराय ॥
चौबोला—चित लेगये चुराय लाडिली देवहु छांड़ि डराईजी ॥

तबयों कहति पीयसों प्यारी सुनहू कुँवर कन्हाईजी ॥
देखे विना तुमाहिं दुख पाऊं कहों कौनसों जाईजी ॥
गुप्त रहन मोसों तुम भाष्यो सो आयसुमैं पाईजी ॥ १ ॥
नहिं सुहात तुम बिन दिन राती प्राणनाथ सुखदाईजी ॥
तुमते विमुख जननके माई मोपै रह्यो न जाईजी ॥
मात पिता अति त्रास दिखावें निन्दत मोहिं सुनाईजी ॥
भवैन मोहिं माटी सों लागत रहत सोच मन माईजी ॥ २ ॥

लावनी।

निश दिन मेरे यह सोच रहत मन माई ॥
तुम विमुख जननके माहिं रह्यो नाहिं जाई ॥
टेक–दुख कहां लगि कहूं गिनाय सुनहु सुखकारी ॥
मोपर अब कीजै कृपा पात दुख भारी ॥
विनती सुन लीजै नाथ अहो गिरिधारी ॥
निज चरणन ते पल एक करो जिन न्यारी ॥
सब कीजे अब दुख दूर अहो सुखदाई ॥
तुम विमुख जननके माहिं रह्यो नाहिं जाई ॥ १ ॥
यह मनतो तुम सों लग्यो और नाहिं चावे ॥
बिन देखे गिरिधर लाल नकछू सुहावे ॥
नाहिं दीसत जब नँदलाल नहीं सुख पावे ॥
कहांलों राखों कुलकानि कही नाहिं जावे ॥
क्योंजीवे जंबुक त्रास सिंह शरणाई।तुमविमुखजनन०२
सुनि सुनि हरि वचन सिहात कहत सो प्यारी ॥
हरषित उर लई लगाय हरचो दुख भारी ॥
बोले प्यारीसों अति हरषित बनवारी ॥

१ आज्ञा। २ प्रतिकूल। ३ घर। ४ सियार।

यह लीला सब मैं तुम हितही विस्तारी ॥
कतदुख पावतहो प्रियाकहामनआई।तुमविमुखजन० ३
तुम बिहार स्थल वृन्दावन अति सुखदाई ॥
हम तुम सँग तब तहँ मिले सघन बनमाई ॥
दीजो मोको कछु सैन ऐहों सुनिधाई ॥
संकेत दोउन उर माहिं आवत कोउ नाई ॥
अब जाहु गेह प्यारी सों कहत कन्हाई ॥
तुम विमुख जननके माहिं रह्यो नहिं जाई ॥ ४ ॥

दोहा–ब्रज यमुना मग लखत दोउ, प्रेम सकोच बढ़ाइ ॥
बिछुरत बनत न रहतही, चितवत अति चहुँघाइ ॥

चौबोला-चितवत अति चहुँघाइ तबहिं कछु युवती ब्रजत आईजी
कछु यमुनाते ब्रजतन आवत दोउ दिश आत लखाईजी ॥
आवत जानि सखिन दोउ दिशते राधा मनहिं लजाईजी ॥
चले तुरत हँसि कुँवर कन्हाई ग्वालन टेर सुनाईजी ॥ १ ॥
रहे कहां तब ते सब ग्वाला टेर कह्यो दधि दानीजी ॥
गये भाव करि कुँवर कन्हाई लियो नागरी मानीजी ॥
कहिहौं यही सखिनसों बानी यह अपने मन ठानीजी ॥
देखी मोहिं संग इन हरिके अबहिं बूझि हैं जानीजी ॥ २ ॥

दोहा–मन मन सोचाति लाडिली, जानाति इनको रंग ॥
उन युवतिन मोहन लखे, देखे राधा संग ॥

चौबोला–देखे राधासंग कहति सब आपुसमें ब्रजनारीजी ॥
देखहु घात करति सखि प्यारी कहा याने मन धारीजी ॥
बात कराति मिलसंग विहारी हमहिं देखि दिये टारीजी ॥
सांची येकहु नाहिं जनै है कहि है बात विचारीजी ॥ १ ॥
इत उतते आ बूझति नारी कहां जात तू प्यारीजी ॥

कहां गये पछितात कहारी अबहिं हते बनवारीजी ॥
कहा दुराव करति तू प्यारी हम लखि लिये मुरारीजी ॥
सांची बात कहो तुम हमसों कहा बूझत गिरिधारीजी ॥ २ ॥
दोहा–चोर हरी मन लेगये, सो पायो तैं प्यारि ॥
अपनो मनले श्यामसों, हमें देखिदियेटारि ॥
चौबोला–हमें देखिदिये टारि सदा तुम करत रहीचतुराईजी ॥
अबतो आय परी फँदमाई अब हमरे वश आईजी ॥
कहत रही जब तब तुम हमसों मोसँग लखो कन्हाईजी ॥
बेसर मेरी छीन लीजियो तब कहियो मनभाईजी ॥ १ ॥
बेसरदेहो कै तुम नाई अब हम लेहिं छिनाईजी ॥
और कछू हमसों अबहूं तुम करिहो कै चतुराईजी ॥
तब हँसि कह्यो नागरी प्यारी तुम सब मिलबो राईजी ॥
ऐसेहि लेहो बेसर मेरी बडी चतुर बनि आईजी ॥ २ ॥
दोहा–यही कहन तुम मोहिं अब, आई हो सब धाय ॥
पीताम्बर दिखराय मुहिं, बेसरलेहु छिनाय ॥
चौबोला–बेसरलेहु छिनाय पीताम्बर बेसर ये संग दोऊजी ॥
ब्रजमें जाय प्रगट करदीजै जो होनी सोहोऊजी ॥
तारी एक बजत कर दोऊ यह जानत सबकोऊजी ॥
सुनि राधा हम तोसोंहारी तोसरकी नहिं कोऊजी ॥ १ ॥
धन्य धन्य तेरी महतारी जाके तू अवतारीजी ॥
तेरे चरित कहा कोउ जाने वश कीने बनवारीजी ॥
अबहीं टार पठायो तिनको हम देखत सब नारीजी ॥
कहत न बनत हमें कछु तुमसों तापर निंदरत प्यारीजी ॥२॥
दोहा–चतुराई अरुकपटरचि, विधना तोहिं बनाहिं ॥
इतनी बुद्धि नहिं श्याममें, जितनी है तोमाहिं ॥

चौबोला–जितनी है तोमाहिं कही तब राधा कहत सुनाईजी ॥
श्याम भले अरु तुमहुँ भली हो राज्यकरो घरजाईजी ॥
वेसर छोरति हो सखि मेरी विनकाजे उठधाईजी ॥
दौरि परी मोपर सबही तुम ज्ञान तुम्हारो पाईजी ॥ १ ॥
जो तुम हती सुजान सखीरी धरती दोउ इक ठारीजी ॥
कहु प्यारी सांची तुम हमसों कछुतो कह्यो बनवारीजी ॥
हाहा बात कहो सोइ प्यारी तुमको सौंह हमारीजी ॥
गये उतै ग्वालनको टेरत तो ढिंगते गिरिधारीजी ॥ २ ॥

दोहा–कहा कह्यो तोसों हरि:, क्यों ठाढी मग आय ॥
सहज होय हमसों कहो, उरते सोच मिटाय ॥

चौबोला-उरते सोच मिटाय कहन लगी मैं यमुना तन आईजी ॥
ब्रजते आवत तुमहिं लखीरी रही देखि तुम माईजी ॥
मैं देखतहीरी तुम धाई आये हरि सुखदाईजी ॥
उन पूछ्यो मोहिं ग्वाल कहांरी मैं बोली कछु नाईजी ॥१॥
मैं सुनि सन्मुख दीठ न लाई हाँ नाँ कह्यो कछु नाईजी ॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई तुम बेसरको धाईजी ॥
सुनि यह बात युवति सकुचाई कछुतौ सांच लखाईजी ॥
ग्वालन टेरत गये कन्हाई यहतौ हम सुन पाईजी ॥ २ ॥

दोहा–तब हँसिकै सखियन कह्यो, सुन लाडिली सुजान ॥
हम मानी तेरी कही, तू मति रिस जिय आन ॥

चौ०-तू मति रिस जिय आन लाडिली तू निर्मल अति प्यारीजी
झूंठहि करत चवाव तिहारो ब्रज घर घर सब नारीजी ॥
अब चलिहो यमुनाके धामा हम सँग चलहिं तिहारीजी ॥
नाम लियो बेसरको एरी चूक परी यह भारीजी ॥ १ ॥
जानतिहो मोहीं तुम जैसी हौ तुम निपट गँवारीजी ॥

झूंठहि धाई दोष लगावन अब दुलरावति सारीजी ॥
क्षणक बुद्धि तुमरी धों कैसी लरतहि तुरत दुलारीजी ॥
गई यमुनते गृहको प्यारी हँसाति चली ब्रजनारीजी ॥ २ ॥
दोहा—कृष्ण प्रीति प्रगट न करी, सखिन सबन बहकाइ ॥
बसत श्याम श्यामा मनहिं, श्यामा श्याम मनमाइ ॥
चौबोला--श्यामा श्याम मनमाइ भेद यह जानत नाहिं सो काईजी
अति आनंद गये गृह दोऊ घर मन लागत नाईजी ॥
कैसेहूकारि दिवस[1] बितायो निशौं[2] विरहरसमाईजी ॥
अति आतुर दोउन मन माई नेकहु नींद न आईजी ॥ १ ॥
विरह नदी सलिलै[4] निशितमहीं पैरतथके निहारीजी ॥
बूड्यो मणि तमचर[5] कह्यो सो मिल्यो पार भिनसारीजी ॥
सुनि तमचरकी टेर मगन मन अति आनँद दोउ भारीजी ॥
लगी चटपटी दुहुन मिलनकी तुरतहि[3] उठे सवारीजी ॥ २ ॥

अथ संकेतके मिलनकी लीला ॥

दोहा—श्याम उठत जननी लखे, रही मुख कमल निहार ॥
बूझति यशुमति जाउँ बलि, कहा तुम उठे सवार ॥
चौबोला—कहा तुम उठे सवार तुरतही जलभर दीनी झारीजी ॥
अति आतुर हरि करी मुखारी मनहिं बसी प्रिया प्यारीजी ॥
मगन ध्यान वृषभानुसुताके विवस भये बनवारीजी ॥
उतवृषभानु सुता सुकुमारी उठि वह भाव विचारीजी ॥ १ ॥
ग्रीवासों मोतीलर तोरी आंचर बांधि दुराईजी ॥
यहै व्याज अपने मनकीनो जैहों बनके माईजी ॥
आंगन गई भवन फिर आई गई बहुरि अँगनाईजी ॥
जातबनेन रह्यो नाहिं जाई फिरत भवन बिततार्इजी ॥ २ ॥

१ दिन। २ रात। ३ शीघ्र। ४ पानी। ५ मुर्गा।

दोहा—गये बनधाम बुलाय हरि, सोई धारेउ बात ॥
मात कह्योरी राधिका, उठी प्रात कित जात ॥
चौ०-उठी प्रात कित जात आज तू डोलति कहा बितताईजी ॥
मुखते कछू वचन नहिं बोलत कहा भोर उठि आईजी ॥
अति नागरि मोती लर तोरी राखी प्रथम दुराईजी ॥
ताही मिसि करिके सकुचाई बोलति नाहिं डराईजी ॥ १ ॥
लखी ग्रीव भूषण बिन प्यारी पुनि पुनि चितई माईजी ॥
खोई कहुँ मोती लरि याने बात जानि मन पाईजी ॥
कंठ लरीतैं कहां गँवाई कहति मात रिसहाईजी ॥
बड़े मोलकी है मोती लर सो तैं कितहि हिराईजी ॥ २ ॥
दोहा—बनवाई तोहित महर, मैं तोहि दइ पहराय ॥
कल्हहि तेरे गर लखी, कहांतैं दई गमाय ॥
चौ-कहांतैं दई गमाय सोचति कहा दे किन बेग बताईजी ॥
सुनि राधा जननीकी बानी हृदय रही हरषाईजी ॥
मनहिं हँसत ऊपर भय मानी कहति भली बुधि आईजी ॥
यामिसि जान श्याम पै हैहै देहैं खोज पठाईजी ॥ १ ॥
कहति मात सों तब भयमानी कहां गिरी सुधिनाईजी ॥
काल्ह सखिन सँग यमुनान्हाई तहाँ धौं तिनहिं चुराईजी ॥
कैधों गिरी कबहुँ जलमाई सो कछु जान न पाईजी ॥
काल्हहिते सोचति मैं भारी कहत न तोहिं डराईजी ॥ २ ॥
दोहा—नेक नींद नहिं निशिपरी, तेरी सों सुनिमात ॥
याही डरते आज मैं, उठी बड़े परभात ॥
चौबोला—उठी बड़े परभात सुनतही जननी मन पछितावैजी ॥
कृष्ण राधिकाके चरित्र गुण पार न कोऊ पावैजी ॥
मैं तोहिं वरजत हार रही री यों जननी समुझावैजी ॥

काऊकी संका तोहिं नाई नदी बनींह किमजावैजी ॥ १ ॥
बहुत तात तोहिं लाड़लड़ाई तुई अनोखीजाईजी ॥
बरजाति मैंजु करत तू सोई कहातेरे मन आईजी ॥
एक एक नग परम सुहायो मणिन जटित बनवाईजी ॥
जाके हाथ परीको देहै घर बैठे निधि पाईजी ॥ २ ॥

दोहा–हियो उमँगि आवत तबै, रीतो गरो निहारि ॥
कहति मात तू कहत किन, कहां दईतैं डारि ॥

चौबोला–कहां दई तैं डारि मात यों प्यारी पै रिसहाईजी ॥
कहा करो जो खोय गईरी तूकाहे पछिताईजी ॥
देत नहीं किन और निकारी और बहुत घर मोईजी ॥
लैहों और मँगाय बाबा सों कहि हों अबहीं जाईजी ॥ १ ॥
करिहै कहा सेति जो राखे धरे कवनहित गोईजी ॥
देनिकासि पहिराय रिमाई इतने हित क्यों रोईजी ॥
सुनि राधा तेरो नाहींरी अब पतियारो माइजी ॥
चौकी हार हमेल कछू मैं नहिं पहिराऊं तोईजी ॥ २ ॥

दोहा–करी आज तैं लाडिली, लाखटकाकी हानि ॥
जब लगि वह ल्यावै नहीं, तब लगि देहुँ न आनि ॥

चौबोला–तब लगि देहुँ न आन जबहिंलो घरनाहिं बैठन पाईजी॥
जलजलरीहि खोजले आवै तब ऐयो घरमाईजी ॥
जाधौं देखि कहूं जो पावै तबहीं तोहि भलाईजी ॥
यमुना गई संग तब कोई बूझि देखि तिन जाईजी ॥ १ ॥
कौन कौनको तोहिं बताऊं कहा लगि नामगिनाईजी ॥
चन्द्रावलि ललितादिकनारी हतीं तहां समुदाईजी ॥
देखो जाय यमुन तट हेरी जहां राखि मैं न्हाईजी ॥
युवती एक रही टकलाई बूझि देखि हौं ताईजी ॥ २ ॥

दोहा–जै है कहां मोती लरी, उनहीं लई चुराय ॥
लगि है आज अबेर मुहि, ढूंढहुँ घर घरजाय ॥
चौबोला–ढूंढहुँ घर घर जाय ऐसे कहि जननीको बहकाईजी ॥
चली तुरत वृषभानु किशोरी अति आनँद मन माईजी ॥
निधरक चली सदन ते प्यारी मनमें बसे कन्हाईजी ॥
कैसे हरिसो देहुँ जनाई यों मन सोचति जाईजी ॥ १ ॥
बार बार सुन्दर सुखदाई जोवत राह कन्हाईजी ॥
प्यारी मुख जिमि शशि उदयकी नैन चकोर नचाईजी ॥
क्षण में घर द्वारे क्षण माई भरे बिरहरसमाईजी ॥
लगी चटपटी प्रेम मिलनकी फिर फिर आवत जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–भूख लगी मोको अती, कहा करत री माइ ॥
मातरसोई करत तहँ, लखि लखि जात कन्हाइ ॥
चौ०लखिलखि जात कन्हाइ यशोमति कह्यो तात बलि जाईजी
अब विलंब नहिं बैठहु मोहन जेवहु अब तुम आईजी ॥
सखा संग सब लेहु बुलाई बोलि लेहु बलि भाईजी ॥
दाऊजी जेवनको आवो टेरत कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
मोको अबहिं भूख नहिं मोहन जेवहु तुमहीं भाईजी ॥
सखन संग ले तब नँदलाला जेवन बैठे आईजी ॥
षटरस व्यंजन सरस सँवारे परसति रोहिणि माईजी ॥
आपुनि कौर उठाय सखनको आयसुदई कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–ताही क्षण श्रीराधिका, कोकिल वचन सुनाइ ॥
पिछवारे नँदसदनके, ललिताको गुहराइ ॥
चौबोला–ललिताको गुहराइ जात मैं वृन्दावन मग माईजी ॥
आवहु वेग तुमहुँ संग हेली सो यह सुनत कन्हाईजी ॥
बिन जेयेहि उठे मनमोहन करते कौर गिराईजी ॥

छांडे सखा सकल जेवतही चले वनहिं अतुराईजी ॥ १ ॥
चौंक परे सब सखासंगके देखरही दोउ माईजी ॥
कहति मात गोपाल आज तुम जात कहाँ अतुराईजी ॥
अबहीं ग्वाल गयो कहि मोई बनमें गाय बियाईजी ॥
मैं जेवन बैठ्यो बिसराई सो सुधि मोहिं अब आईजी ॥ २ ॥

दोहा—तुम जेवहु लखि आतमैं, करीश्याम चतुराइ ॥
गाय बियानी बनहिं में, यह कहि चले कन्हाइ ॥

चौबोला—यह कहि चले कन्हाइ सखा सब हँसत मनहिंमनमाईजी
नहीं गाय बछरा ह्वां नाहीं बात श्यामकी पाईजी ॥
है प्यारी रानी ह्वां राधा हमते कहा दुराईजी ॥
जननी नहीं कछू यह जानी बार बार पछिताईजी ॥ १ ॥
राज्यकरो यह गाय वियाई भूखे गये कन्हाईजी ॥
गईसैनं दे बन श्रीराधा पहुँचे तहां सुखदाईजी ॥
देखत हरषभये मन दोऊ आनँद उर न समाईजी ॥
मिले धाय गहि अंकममाला सो सुख वरनि नजाईजी ॥

दोहा—नवल कुंज नव नागरी, नव नागर नँदनन्द ॥
प्रेमसिंधु मर्याद तजि, मिले उमँगि आनंद ॥

चौबोला—मिले उमँगिआनंदनिरख छबि कोटिक मदनैलजाईजी
विलसत विविध विलास मनोहर युगल रूप सुखदाईजी ॥
शोभित कुंज कुटी छबि धामा राधा कुँवर कन्हाईजी ॥
सो छबि बरन सके छबिको है चितवत नैन दुराईजी ॥ १ ॥
रीझे श्याम नागरी छबिपर प्यारी लखत कन्हाईजी ॥
अरस परस दोउ रूप निहारे देहदशा विसराईजी ॥
बैठे कुंजधाम सुखदाई कोमलसेजसुहाईजी ॥

१ सब। २ छिपाई। ३ कामदेव।

बहत समीर सुखद पुरवाई हरित भूमि छबि छाईजी ॥ २ ॥
दोहा—लटकत चहुँ दिश कुसुम द्रुम, फूलि रही तरुडारि ॥
आये मेघ उलटि तहाँ, परत बूंद श्रमहारि ॥
चौबोला—परत बूंद श्रमहारि सुरंग रंग भीजाति चूनरि सारीजी॥
मन सकुचत लखि रसिक बिहारी भावत मन हरि प्यारीजी ॥
हँसि हँसि करत प्रेमकी बातें प्यारी अरु बनवारीजी ॥
भीजेरस रँग प्रेम सुखद जल श्रीराधा गिरिधारीजी ॥ १ ॥
भीजे अम्बर कुंज गेह युग हरि प्यारी सँग दोऊजी ॥
यह अचरजकी बात कहैको सांच न मानत कोऊजी ॥ २ ॥
रमत द्रुमन तर गोपसुता संग पारब्रह्महै सोऊजी ॥
यह विधि कारि बिलास बनमाई मगन भये मन दोऊजी ॥ २ ॥
दोहा—इहि विधि बिलस बिलास बन, कह्यो श्याम सुखदाइ॥
अब गृह जावहु लाडिली, भई सांझ नियराइ ॥
चौ०-भई सांझ नियराइ मात पितु करिहैं कहुँ दुचिताईजी ॥
यह रस रीति गुप्त की नीकी प्रगट करो जिनकाईजी ॥
तुमरो बोल सुनत उठधायो करते कौर गिराईजी ॥
मेरे प्राण वसत तुम माई इक क्षण विसरत नाईजी ॥ १ ॥
सुनि सुनि बातें पियकी प्यारी रही मनहिं हरषाईजी ॥
अतिसनेह बोली सकुचाई सुनहु श्याम सुखदाईजी ॥
कहा करों पगजात न घरको मन अटक्यो तुम माईजी ॥
दृग तुमको देखत सुखपावैं गुरुजन नाहिं सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा—सर्वहानि हम सहत हैं, लखि तुमरी मुसकानि ॥
वशीकरण यामें वसत, बिबिस करत मन आनि ॥
चौ०-बिबिस करत मन आनि ऐसी विधि प्रगट सनेह जनाईजी॥
भये परम आनन्द सरसरस सो सुख बरनि न जाईजी ॥

श्याम लई उरलाय प्रिया घर हँसिकर बोध पठाईजी ॥
सुन्दर घन सुखके सदन हरि चले आप सुखपाईजी ॥ १ ॥
करति मात अवसेर विसाला पहुँचे सदन कन्हाईजी ॥
लीने धाय लाय उर मैया कहति लाल बलि जाईजी ॥
करते कौर डारि उठ भागे सुरत गायकी आईजी ॥
ताते प्रीति अधिक उर आनी लोही गाय बियाईजी ॥ २ ॥

दोहा—भ्रमत थक्यो वृन्दाविपिन, वह न हमारी गाय ॥
बंसीबट यमुना निकट, ढूँढ्यो सब बनजाय ॥

चौबोला-ढूंढ्यो सब बनजाय हते कोउ सखा संग तहँ नाईजी ॥
फिरचो अकेलो बनके माई युवति एक तहँ पाईजी ॥
सो पहुँजाय गई घर मोहीं सुनि यशुमति पछिताईजी ॥
धोये पदले तातो पानी तुरतहि भोजन ल्याईजी ॥ १ ॥
कीनो भोजन अति रुचि करि हरि रोहिणि बीरा ल्याईजी ॥
निरखि मुखार्विंद सुखलीनो बार बार बलि जाईजी ॥
लीला सागर कुँवर कन्हाई भक्तनके सुखदाईजी ॥
नँदनंदन सुन्दर सुखसागर विहारन लेत बलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—इत श्रीकीरतिनंदनी, रूपराशि गुणखान ॥
चली श्याम सुख देभवन, नागरि नवल सुजान ॥

चौबोला—नागरि नवल सुजान जल जसरी लई खोलि करमाईजी
सखी मिली इक बूझति मगमें प्यारी कहा ते आईजी ॥
गई हती यह काज बतायो कह्यो ताहि समुझाईजी ॥
ऐसी निडर भई कहा राधा यों सखि कहति सुनाईजी ॥ १ ॥
ब्रज घर घर तू फिरत अकेली संग सखीकोउनाईजी ॥
ऐसी तैं करनी यह कीनी मोको सँग न बुलाईजी ॥
बीत्यो दिवस निसा नियराई तबते तू अब आईजी ॥

देखों मोहिं बताय जलजसरी कहां तोहिं पुनि पाईजी ॥ २ ॥
दोहा—चतुर सखी मन लखि लई, मिलवत झूंठी बात ॥
गई हती बन हरि निकट, विलस श्याम सँग आत ॥
चौ०—विलस श्याम सँग आत जानसखी प्यारी कहत सुनाईजी॥
कैसे जाय कहां ते पाई किन यह लरी दुराईजी ॥
ब्रज युवतिन सबहिन मैं जानू दे किन नाम बताईजी ॥
क्यों नहिं नाम लेत तू ताको बात तिहारी पाईजी ॥ १ ॥
चोर तुम्हारे कुँवर कन्हाई तिन सों तू मिल आईजी ॥
रसवश कीने श्याम लाड़िली बातें कहत बनाईजी ॥
कहैं देत रस रंग भरी छबि अंग अंग पर छाईजी ॥
कहां हार कहां ग्वालिन प्यारी कहां जाय तू ल्याईजी॥२॥
दोहा—अटपटि बात बनायके, कहा बहकावति मोहिं ॥
जबते तैं हरि संग लियो, तबते जानति तोहिं ॥
चौबोला-तबते जानति तोहिं सुनतही प्यारी वचन सुनावेजी ॥
इन बातन कछु पावत हैरी कहा तेरे मन आवेजी ॥
देखति मोहिं अकेली जबहीं नइ नइ बात उपावेजी ॥
बिन देखेही झूंठ लगावे नाहक वैर बढ़ावेजी ॥ १ ॥
जोर कहतिकै देखी मोहीं बूझति सौंह दिवाईजी ॥
जब जानी प्यारी बिरुझाई चतुर सखी मुसकाईजी ॥
तब हँसि कह्यो जाहु घर प्यारी जिनमोपै रिसहाईजी ॥
चली भवन वृषभानु किशोरी सोचति तहँ घर माईजी ॥२॥
दोहा—सोचती करति मन अती, राधा दई पठाय ॥
प्रात गई आई नहीं, भई सांझ नियराय ॥
चौबोला—भई सांझ नियराय हारहित ताको त्रास दिखाईजी ॥
ताते रूष रही कहुँ जाई अबलों घर नहिं आईजी ॥

है है धौं काके घर माई कहां अब ढूंढूं जाईजी ॥
सुतासनेह अधिक अकुलाई बार बार पछिताईजी ॥ १ ॥
सुनि हैं बात महर कहुँ अबहीं मोपर अति रिसहाईजी ॥
सोचति जननी विकलभई अति धीर धरत मननाईजी ॥
उरडराति श्री कुँवरि राधिका ताही क्षण घर आईजी ॥
देखतही उठधाय मात अति हरषि लई उरलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—सोच मिट्यो धीरज भयो, सुता मात उरलाइ ॥
लैरी मैया हार यह, जाकारण रिसहाइ ॥

चौबोला—जाकारण रिसहाइ सुनतही कीरति मुखतन जोईजी॥
मनहीं मन अतिशय पछितानी पोच करी इन मोईजी ॥
अति प्रवीण राधिका पियारी चरित न जानतकोईजी ॥
अगम अगोचर लीलाधारी ब्रज वनितन बशसोईजी ॥ १ ॥
जाको शिव सनकादिक ध्यावैं सो ब्रज लीला धारीजी ॥
हरिकी कृपा अगोचर सारी निगमते अगमन भारीजी ॥
राजा रंक पुरुष कहानारी प्रीति विविस गिरिधारीजी ॥
देवकि उदर प्रीति वशआये भक्तनके हितकारीजी ॥ २ ॥

दोहा—प्रीति विवस यशुमति महरि, पयप्यायो उरलाइ ॥
नंदसुवन भये प्रीति वश, बन बन धेनु चराइ ॥

चौबोला—बन बन धेनु चराइ प्रीति वश घर घर दही चुरायोजी
प्रीति विवस ऊखल बँधवाये प्रीतहिगिरिहि उठायोजी ॥
प्रीति विवस लीला बहु कीनी नटवर भेष बनायोजी ॥
प्रीति विवस गोपिन संग कामी प्रीति विवस ब्रज आयोजी॥१॥
तीन भुवन विख्यात प्रीतिके वशही कुँवर कन्हाईजी ॥
नंद महरको तात कहो कोउ बिना प्रीति नहिं पाईजी ॥

१ पुत्री। २ हृदय। ३ चतुर। ४ अलख। ५ वेद। ६ पेट।

प्रीति करो मनलाय विहारन प्रभु पद ध्यान लगाईजी ॥
प्रभु रीझत हैं सदा प्रीति सों कहत वेद श्रुति गाईजी ॥ २ ॥

अथ प्यारीजीके घर मिलनकी लीला।

दोहा–प्यारी वश हरि इमि भये, तजत एक क्षण नाहिं ॥
संगहि फिरत जिमि देहके, जहाँ जात तहँ छाहिं ॥

चौ०-जहाँ जात तहँ छांहिं प्रियाके सँगही रहत कन्हाईजी ॥
वदन कमल रस रूप लुभाने जैसे अलिमडराईजी ॥
वचन नादरस मृग ज्यों गीधे नैन बंक शरखाईजी ॥
कवहूं श्याम यमुन तट जावे बिन देखे न सुहाईजी ॥ १ ॥
कवहूं जाय कदम चढि हेरत चहुँ दिश कुँवर कन्हाईजी ॥
गृहबन कहूं लगत मन नाहीं मिलन चहत चितमाईजी ॥
तब वृषभानु पुरा तन आये मुरली मधुर बजाईजी ॥
प्यारी प्रगट श्याम गति देखी मनई माहिं सिहाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गुण सागर रस रूप निधि, अति अनुराग बढ़ाय ॥
शशि चकोर अंबुज अली, अरस परस दोउ चाय ॥

चौ०–अरसपरसदो उचाय सखिन सँग प्यारी यमुन सिधाईजी ॥
देखे नँदनन्दन तहां ठाढे भरी प्रेमरसमाईजी ॥
सखियन संग जानि श्रीराधा मन डरपी सकुचाईजी ॥
श्याम परेहैं फंद मदनके कौन कहै समुझाईजी ॥ १ ॥
सखियनके संकोच वदनते हरि सों बोलन पावैजी ॥
हृदय भयो अति सोच श्याम तनु देखि मनहिं पछितावैजी ॥
सखियन सों मिलि बात बनावै हरिको भाव जनावैजी ॥
सहज अलक निरवारनकीने लखि हरि तन मुसकावैजी ॥ २ ॥

दोहा—यमुनाते आवति सखी, ताहि कह्योरी बाम ॥
मेरे घर तू आइयो, हर्ष भये सुनि श्याम ॥
चौबोला—हर्ष भये सुनि श्याम लाडिली दियो सोभाव जनाईजी॥
श्याम सुजान जान सोइ लीनो गये भवन हरषाईजी ॥
प्यारीचली सखिनके संगमें बात सखिनसों पाईजी ॥
भाव कछू इन हरि सों कीनो आपुसमें बतराईजी ॥ १ ॥
हरि तन लखि मुख सो करलायो पुनि ये कछु मुसकाईजी ॥
सदन बुलाय सखीको टेरी गये श्याम हरषाईजी ॥
ये अति चतुर करी चतुराई और भाव कछुनाईजी ॥
आजरैन मिलि हैं ये दोऊ यह हम बात लखाईजी ॥ २ ॥
दोहा—ले यमुना ते जल तुरत, सखिन संग घरआइ ॥
भावदियो निशि आयहैं, मेरे कुँवर कन्हाइ ॥
चौबोला—मेरे कुँवर कन्हाइ आय हैं भूषण वसन सजावैजी ॥
सहज रूपकी खान राधिका अरु शृंगार बनावैजी ॥
कोकरसके बखान लाडिली त्रिभुवन पति मन भावैजी ॥
वेणी रचि निज पाणि सँवारी अंग शृंगार सुहावैजी ॥ १ ॥
कियो भाल बिन्दुकानीको मोतिन माँग भराईजी ॥
लोचन अंजन रेख सँवारी श्रवण नखन छबि छाईजी ॥
नासा नथ सोभित अधरन पर नाग बेल अरुणाईजी ॥
सुभग अंग सब नौसतसाजे वसन सुगंध सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा—मन जोवति मग श्यामको, ऐहैं आज कन्हाइ ॥
आवन पै हैं कै नहीं, कै आवत मगमाइ ॥
चौबोला—कै आवत मगमाइ कैधौं तात मात भय पाईजी ॥
कै आवत मेरे घर डरिहै यों सोचति मनमाईजी ॥
कैकहुँ खेलन में चितलावै आवेंगे कै नाईजी ॥

कबहूँ रचि रचि सेज सँवारे मन अति हरष बढाईजी ॥ १ ॥
मेरे घर आवै कहुँ अबही सुन्दर कुँवर कन्हाईजी ॥
डारों सुभग पावडो धामहिं अति अनुराग भराईजी ॥
यों अभिलाषा करत ताहि क्षण प्रगटे जन सुखदाईजी ॥
कोकहि सके बखान भयो जो सुख दोउन मन माईजी ॥ २ ॥

दोहा–वह छबि कापैजात कहि, वहै प्रेम सकुचानि ॥
वह रस झिझकन अंगकी, वहै मधुर मुसकानि ॥

चौबोला–वहै मधुर मुसकानि वहै छबि बांकी परम सुहावैजी॥
वह रस प्रेम सुभग दुहुँ धांको सोछबि बरनि नजावैजी ॥
वह सुख युगल रूपको कहत में शिव विधिपै नाहिं आवैजी ॥
वेद भेद पावत नाहिं जाको कौन कबी सो गावैजी ॥ १ ॥
श्यामा श्याम सेजपर सोहैं अरस परस बलिहारीजी ॥
कोटि काम रति सम नहिं सोऊ गुणसागर दोउ भारीजी ॥
युगल परस्पर अंग सँवारे प्रेम विवस पिय प्यारीजी ॥
अलक सुधारत श्रीगिरिधारी पाग सँवारत प्यारीजी ॥ २ ॥

दोहा–रस विलास आनंद सुख, अति अनुराग बढाय ॥
आलिंगन चुंबन सरस, करत दोउ सुखपाय ॥

चौ०-करत दोउ सुख पाय इह विधि निशि त्रय याम बिताईजी॥
हास विलास विविध रस रीती करत दोउ मन भाईजी ॥
अति रस मत्त युगल अलसाने पुनि पौढे लपटाईजी ॥
बीती रात भोर नियराई उडुगण ज्योति हिराईजी ॥ १ ॥
भई दीप छबि छीन आपही गये कुसुम कुम्हिलाईजी ॥
विकसे सरस सरोज बहत सम शीतल पवन सुहाईजी ॥
सरस वचन बोली तब प्यारी जागहु कुँवर कन्हाईजी ॥
प्राची दिशि पीरी परि आई भयो प्रात सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—शशि मलीन छूटे अली, कुमुदिन गइ सकुचाय ॥
बोले तमचर जहँ तहां, रही चिरइ चहचाय ॥
चौबोला—रही चिरइ चह चाय प्राण पति उठहु श्रीगिरिधारीजी
है ब्रज घर घर घेर हमारो लखति रहत ब्रजनारीजी ॥
जागहिं जिन गुरुजन डर भारी सुनत उठे बनवारीजी ॥
चले सदन अपने अतुराई निकसत देखे नारीजी ॥ १ ॥
यह उनकी मन साद पुराई दीनो दरश कन्हाईजी ॥
पीतवसन कटि नैन विसाला शीश मुकुट छविछाईजी ॥
अंग अंग छवि बरनि न जाई श्याम बरन सुखदाईजी ॥
निकसगये घर कुँवर कन्हाई देखत रही लुभाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बार बार यह लाडिली, मनहीं मन पछितात ॥
गये श्याम आलस भरे, नेकु न सोये रात ॥
चौबोला—नेकु न सोये रात गये हरि लखे सखिन कहुँ नाईजी ॥
मैं राख्यो है गोय अबैलों सखियन नाहिं जनाईजी ॥
देख्यो जाय पवँरिहै प्यारी जहँ तहँ सखी लखाईजी ॥
सकुचि गई चिन्ता उपजाई बार बार पछिताईजी ॥ १ ॥
हरिसों प्रीति गुप्तही कीनी आज प्रगट ह्वै आईजी ॥
निकसत सखिन आज मोघरते देखे हरि सुखदाईजी ॥
नितही नित बूझति ये मोसों मैं इनसों सतराईजी ॥
करि हैं मोसों बहुत परेखो देखे प्रगट कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा—भलो दाँव इनको मिल्यो, अब न छिपायोजाइ ॥
अबहिं आय ये बूझि हैं, कहाकरिहौं चतुराइ ॥
चौबोला—कहाकरिहौं चतुराइ राखनहारि गुप्तहि प्रीतिबताईजी॥
प्रगट करों तो होय अनीती परचो सोच अति आईजी ॥
सोच परचो कछु बात न आवै विनती प्रभुहि सुनाईजी ॥

प्राणनाथ हरि होउ सहाई मेरी पति रह जाईजी ॥ १ ॥
दीजै नाथ बुद्धि अब सोई सखियनके मनभावैजी ॥
ऐसे सोचति कुँवरि राधिका कबहुँक हरिहि मनावैजी ॥
कबहूँ सुख प्रभुको मन समुझत प्रेममगन ह्वै जावैजी ॥
भयो बोध उर हरि सुमिरतही सो मनमाहिं उपावैजी ॥ २ ॥

दोहा–मन मन हरषी नागरी, कहिहौं सखियनजान ॥
परम चतुर श्री राधिका, रच्यो बोध उर आन ॥

चौ०-रच्यो बोध उर आन अनँदमन हरष पुलकतनुआयोजी ॥
सोच मोह उरते विसरायो मन अति हरष बढायोजी ॥
जोवे सुन्दर कुँवर कन्हाई सखियन दरश दिखायोजी ॥
उनसों सोई रूप बखानूं यह विचार ठहरायोजी ॥ १ ॥
बैठी सदन[1] लाडिली प्यारी श्याम सनेह सुहाईजी ॥
कहति सखी देखैं चल राधा आपुस में बतराईजी ॥
देखें चलो वदन छबि कैसी निधरकके भय पाईजी ॥
आज रैनि[2] हरिसों रतिमानी कहिं हैं कहा सुनाईजी ॥ २ ॥

दोहा–गई जहाँ श्रीराधिका, सब मिलके ब्रजनारि ॥
देख रही बोली नहीं, रही मौन सो धारि ॥

चौबोला–रही मौन सोधारि बात कछू बोली मुखते नाईजी ॥
सखियनको नैननकी सैनन निकट बोल बैठाईजी ॥
चतुर सखी सबहिन यह निजै[3] निज जान लई मन माईजी ॥
देखतही बोली नहिं हमसों इन कछु बात उपाईजी ॥ १ ॥
अपनो भेद कछू नहिं कहिहै कहाधौं बात बनावेजी ॥
अपनी जांघ बल चीर चुरावे प्रगट कही नहिं जावेजी ॥
निधरक भई श्याम सँग पाई यह काऊ न पत्यावेजी ॥

१ घर। २ रात। ३ अपन।

कहैं कहा धों बात सँवारी भ्रुकुटी त्योरलखावेजी ॥ २ ॥
दोहा–राखति तुमहूं गर्व मन, बोलति किन कोउ आय ॥
सुनहुँ अहो श्रीराधिका, कहति सखी मुसकाय ॥
चौबोला–कहति सखी मुसकाय मूंद मुख कहा बैठीरी प्यारीजी॥
कापर रिस करि मौन गही है लहहू भान दुलारीजी ॥
हम सों कहत नहीं सो ऐरी हम तो सखी तिहारीजी ॥
कै देवनको ध्यान धरचो कै परचो सुभाव यहै कारीजी ॥
जब जब हम आवति घर तेरे मिलन तोहिं सबनारीजी ॥
तब तब हमसों बोलति नाहीं यहै धरणतें धारीजी ॥
हमतो राखति नाहिं दुराऊ तुम राखति क्यों प्यारीजी ॥
ज्वाबदेत आवत नहिं तुमसों ऐसो सोच कहा भारीजी ॥ २ ॥
दोहा–कछु दिनते तेरी प्रकृति, अरी परी यह कौन ॥
निठुर भई हमसों रहति, जब तब साधतमौन ॥
चौबोला–जब तब साधत मौन हृदयकी बात कहति हो नाईजी
प्यारी सों ब्रजनारि सकल मिल ऐसे कहि मुसकाईजी ॥
मनहीं मन जानति सब प्यारी हँसी करत समुदाईजी ॥
परम प्रवीन सकल गुणखानी बोली मधुर सुनाईजी ॥ १ ॥
सुनहु सखी बूझत कहा मोसों कहा मैं कहूँ बुझाईजी ॥
आज प्रात इक चरित नयोरी जात इते लखि पाईजी ॥
नेकहि देखन पाइ तबहिंते मोमनरह्यो लुभाईजी ॥
कै घनश्याम कै श्याम कन्हाई रह्यो सोच मनमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–पीत वसनकै दामिनी, शीश मुकुट कै व्याल ॥
बकपंक्ती कै गज मुकत, इन्द्रधनुषकै माल ॥
चौबोला–इन्द्रधनुष कै माल मधुर ध्वनि गरजन परम सुहाईजी
कैधों पगमें नूपुरकी ध्वनि यह मैं जानति नाईजी ॥

देखे आज श्याम तबहींते यह धोखो मनमाईजी ॥
कहा करों हरिकी चपलाई गये रूप दरशाईजी ॥ १ ॥
भरी श्याम रस कुँवरि सयानी निधरक बात बनावैजी ॥
सखी कहति सब आपुसमाई याको भेद न आवैजी ॥
प्रगट करनको हम सब आई यह आपहि प्रगटावैजी ॥
हम देखे जिहिं भाँति कन्हाई इन देखे सतभावैजी ॥ २ ॥
दोहा—यह सूधी हमहीं कुटिल, दोष देति सब बाम ॥
जो चाहो पति आपनी, बहुरि लेहु जिननाम ॥
चौबोला—बहुरि लेहु जिननाम सखी तुम यासोंजीतो चावौजी॥
मनते गर्व करो जिन रीतो यासों जिन बतरावोजी ॥
यह हरिकी प्यारी पटरानी याकी बुधि नहिं पावोजी ॥
हम याकी दासी समनाहीं समुझि मनहिं रहजावोजी ॥ १ ॥
याकी स्तुति कहा बखाने इन जाने गिरिधारीजी ॥
तब हँसि कह्यो सखी सुन प्यारी तैं जो लखे वनवारीजी ॥
गये कान्ह वे मेघ नकारे जो तुम प्रात निहारीजी ॥
मोर मुकुट शिर व्यास नहोई मानहु बात हमारीजी ॥ २ ॥
दोहा—कटि पटपीत न दामिनी, कहति एक ब्रजबाल ॥
बक पाती नहिं इन्द्र धनु, मुक्तमाल बनमाल ॥
चौबो०—मुक्तमाल बनमाल नूपुर ध्वनि जलधर गरजन नाईजी ॥
मत राखो धोखो मन माई देखे प्रात कन्हाईजी ॥
धनि धनि ब्रजकी नारि हरी छवि लखत रहति मन भाईजी ॥
मोहिं होत धोखो जब तबहीं लखत रूप सुखदाईजी ॥ १ ॥
तुम देखति हरि गात कवन विधि सकल दृगन ठहराईजी ॥
मैं बहु यत्नकरे पचिहारी मोपै लखे न जाईजी ॥
तुम दरशन पावतरी कैसे वैसेहिं देहु बताईजी ॥

तुम देखत कैसे ठहराई अति छवि चपल कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हृदय रूप राखति किमी, सांच कहो समुझाइ ॥
रहत सदा अभिलाष मन, मो पै लखे न जाइ ॥
चौबोला-मोपै लखे न जाइ कहति हो धनि वृषभानु दुलारीजी
धनि तुम पिता धन्य महतारी धन्य धन्य तुम प्यारीजी ॥
धनि सो दिवस रैनि सो बारा धन्य घरी अवतारीजी ॥
तेरे चरित कहा कोउ जाने वश कीने गिरिधारीजी ॥ १ ॥
एक सुभाव धन्य तुम दोऊ तुमको कोउअ न पावेजी ॥
तोंहि श्याम हम कहा दिखावैं तुम हरि हरि तुम भावेजी ॥
वे तोमें तू उनमें प्यारी कहा हमहिं सिखरावेजी ॥
एक जीव द्वै देह तुम्हारी हमको प्रगट लखावेजी ॥ २ ॥
दोहा–उनकी पटतर तैं लई, तो पटतर उन माहिं ॥
गूंगो स्वाद न कहि सकै, जानत मन कहा नाहिं ॥
चौ॰-जानत मन कहा नाहिं बसी उर तेरे उरहि कन्हाईजी ॥
अरस परस जिमि देखिये प्यारी दर्पण दर्पण छाईजी ॥
तुम दोउ निर्मल गात लाडिली कही कौन पै जाईजी ॥
तू उनके रँग माहिं रंगी है वे तेरे रँग माईजी ॥ १ ॥
तुम छवि पीत बसन उन केरे तैं नीलांबर धारीजी ॥
घनभीतरदामनी विराजै दामिन घन चहुँधारीजी ॥
नँदनंदन वृषभानुकिसोरी जोरी अति शुभकारीजी ॥
सुनि सुनि सखियनके मुखबानी बोली राधा प्यारीजी ॥ २ ॥
दोहा–सुनि ललिता सांची कहों, मैं बूझति सकुचाइ ॥
मोसों कछुयक प्रीति मन, राखत कुँवरकन्हाइ ॥
चौबोला–राखत कुँवर कन्हाइ तू हरिके मनकी जानतिसारीजी
सुन राधा इतरात कहारी तोते और न प्यारीजी ॥

रहत पवन पंखा वश जैसे तेरे वश गिरिधारीजी ॥
वशहि भये तेरे बनवारी तजत न इक क्षणन्यारीजी ॥ १ ॥
ज्यों चकोर शशिके वशमाई ज्यों शरीर वशछाईजी ॥
नाद विवस मृगदेखिये जैसे हरि तेरे वश माईजी ॥
मिलीखरकतू हरिसों जाई जबते गाय दुहाईजी ॥
तबते वशहिं भये हरि तेरे नेकहु न्यारे नाईजी ॥ २ ॥

अथ गर्वव्याज विरहलीला।

दोहा–नेकहु तुम न्यारे नहीं, वरनों कहा सनेह ॥
वे दक्षिण तुम बाम अँग, हो तुम एकहि देह ॥

हौ तुम एकहि देह सुनी तब ललिताके मुख वानीजी ॥
मैं ऐसी जियमें यह जानी अति आनँद उर आनीजी ॥
होराधा आधा अंग हरिकी और न मोहिं समानीजी ॥
अनत जात देखोंतौ लरिहों यह अपने मनठानीजी ॥ १ ॥
ऐसे गर्व कियो मन प्यारी गईं घरन सब नारीजी ॥
गर्व विभंजन जन सुखकारी आये तब बनवारीजी ॥
हरि अंतर्यामी अविनाशी जानि गर्भ भरि प्यारीजी ॥
उझकि झांकि प्यारी तन हेरचो लखि मुख फेरचो प्यारीजी॥ २ ॥

दोहा–अहो कान्ह मानत नहीं, उझकि लखत घर माइ ॥
घर घेरौ छांडत नहीं, देखत युवतिन आइ ॥

चौबो०-देखत युवतिन आइ कैसे कोऊ रहत घरनमें नारीजी ॥
तुम आवत मानत डर नाईं कहति श्यामसों प्यारीजी ॥
प्राणनाथ तन नाहिं निहारी प्रेम गर्व मन धारीजी ॥
बैठ रही अभिमान जनाई आये द्वार मुरारीजी ॥ १ ॥
हृदय श्याम मुख धामके माईं राख्यो गर्व बसाईजी ॥

१ हवा। २ तुल्य। ३ नाशक।

ठौर तहां पायो नहिं तबहीं रहे श्याम सकुचाईजी ॥
जहांरहत अभिमान मनहिंमें तहां बास मम नाईजी ॥
आप लगे पछितान हरी लखि सो राधा उरमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–तुरत गवनकर तहांते, गये श्याम सुखदाइ ॥
प्यारी बैठी सदनमें, दियो दरश हरि नाइ ॥
दियो दरश हरि नाइ चकित भई तब प्यारी मन माईजी ॥
यहां श्याम आये क्यों नाई भयो सोच अधिकाईजी ॥
आपुन द्वार आय पुनि देख्यो तहां लखे हरिनाईजी ॥
झाँकतही फिर गये कन्हाई प्यारी मन पछिताईजी ॥ १ ॥
मोते चूकपरी अतिभारी तब हरि मोहिं बिसारीजी ॥
एक तो बैठ रही गरबाई द्वितिय रोष उरभारीजी ॥
मेरी बुद्धि जानि कै हीनी तजी मोहिं गिरिधारीजी ॥
वे बहुनायक कुंजविहारी मोसी कोटिक नारीजी ॥ २ ॥
दोहा–कोल्यावै कासो कहूं, को हरि आन मिलाइ ॥
भई विरह व्याकुल अती, वदन गयो कुम्हलाइ ॥
चौ०–वदन गयो कुम्हलाइ कवन विधि मिलहिं मोहिं बलबीरैजी
नैनसरोजन सों जलडारै नेकहु धरत न धीरैजी ॥
भई विकल अति नागरि मनमें विरह व्यथाकी पीरैजी ॥
खान पान कछु मनहिं न आवै सुधि बुधितजी शरीरैजी ॥ १ ॥
भये सुखद सबही दुखदाई घर बाहर न सुहाईजी ॥
विहारनमन प्रभुके मिलनेको रह्यो सोच उरछाईजी ॥
राधा सदन सखी पुनि आई देखि दशा पछिताईजी ॥
नीर विहीन मीन जिमि दीने व्याकुल सखिन लखाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कर गहि गहि बूझति सखी, कहा भयो तोहिं आय ॥
विवस भई ऐसी कहा, हमको देहु सुनाय ॥

चौबोला—हमको देहु सुनाय हमहिं तू तब तो नीक लखाईजी॥
क्यों मुरझाय गईरी अबहीं कहा व्यथा भइ आईजी॥
बहुरि लखे धौं कतहुँ कन्हाई तोहिं ठगोरी लाईजी॥
जान्यो हरि आये अनुरागी कान्ह नाम सुन पाईजी॥ १॥
आतुर सखी कंठ लपटाई कह्यो चूक परि भारीजी॥
अब अपराध क्षमो रिस त्यागी करुणामय गिरिधारीजी॥
चकित भई सब व्रजकी नारी राधे रही निहारीजी॥
शीतल जल सों मुख पखरायो कह्यो सखी सुनि प्यारीजी॥२॥

दोहा—आज भई कैसी दशा, हमहिं कहो समुझाय॥
भयो अलिनके वचन सुनि, कछुकचेत उरआय॥

चौबोला—कछुकचेत उरआय सखिनको जानि गई सकुचाईजी
काहे तू ऐसी भइ प्यारी गयो वदन कुम्हिलाईजी॥
बार बार बूझति सब आली कहु प्यारी समुझाईजी॥
बोली तब सखियन सों प्यारी तुमसों कहा दुराईजी॥ १॥
उनमोहिं तजी कुटिल मति जानी मैं हरि हाथ बिकानीजी॥
अपनी कथा श्यामकी करनी कहो सो प्रगट बखानीजी॥
बैठीही मैं सदन अकेली आये हरि सुखदानीजी॥
आदर करि नहिं भवन बुलाये रही गर्व उर आनीजी॥ २॥

दोहा—मैं आदर कीनों नहीं, रही गर्व उर आनि॥
अन्तर्यामी वे हरी, मो मनकी लइ जानि॥

चौबोला—मोमनकी लई जानि सखी मैं रही गर्व उरधारीजी॥
कमलनैन वे गर्वप्रहारी गये हरि मोहिं विसारीजी॥
अहंकार यह फल मोहिं दीनों विरह विकल करडारीजी॥
अब मन रहत नहीं विन देखे श्यामसुन्दर बनवारीजी॥ १॥
चित न रहत कितनों समुझाऊ कैसे दरशन पाईजी॥

भयो भवन वन मोकों आली विन श्री कुँवर कन्हाईजी ॥
अब हरि मिलें सो करहु उपाई लागत तुम्हरे पाईजी ॥
विन मनमोहन कुँवर कन्हाई भये सुखद दुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—गिरि कन्यापति तिलकैकर, दाहत अनल समान ॥
शिवसुत वाहन भखनको, भयो हलाहल पान ॥
चौबोला—भयो हलाहल पान सखी मुहि विन श्रीनन्दकुमाराजी
भयो इन्द्रआयुधसम आली जलधि सुतासुत हाराजी ॥
शाखाँमृगरिपु भये बसनबर मलयज मनहुँ अँगाराजी ॥
भयो काम मोको अब वैरी सखि यह हाल हमाराजी ॥ १ ॥
अब सुभाव रहिहौं हरि साथा मिलहीं मोहिं कन्हाईजी ॥
सुनि राधा करनी यह तेरी हमसों बात दुराईजी ॥
अबहीते ऐसे ढंग ठाने उनको जानति नाईजी ॥
एकहि बार मिली तू धाई सबमर्याद वहाईजी ॥ २ ॥
दोहा—मूंड चढायो तैं उन्हें, हमहिं नभेद जनाइ ॥
भवन विपिन डोलन लगी, हरिके संगतूजाइ ॥
चौबोला—हरिके संग तू जाइ निजकर अपनी कानि गमाईजी ॥
परवश परि कौने सुख पायो सोच देख मनमाईजी ॥
मेरो कह्यो अजहुँ मन प्यारी मानोगी कै नाईजी ॥
धीरज धर कत मरत वृथाई तूंकर मान सवाईजी ॥ १ ॥
वात आपनी अपने करहै देखहु सोच विचारीजी ॥
भई कहा ऐसी विवस तू ऐरी एकहि वारीजी ॥
पुरुष भँवर जिमि जानि लाडिली बहु सुमनन हितकारीजी ॥
बिना कियेरी मान पिय निज कौन किये वश प्यारीजी ॥ २ ॥
दोहा—कहति सखी तू बात यह, कंप होत सुनि गात ॥

१ चन्द्र। २ अग्नि। ३ विष। ४ वज्र। ५ समुद्र। ६ मोती। ७ बंदर। चंदन।

मान कियो मैं श्यामसों, ताते यह दुख पात ॥
चौबोला—ताते यह दुख पात भूलि अब मान करों मैं नाईजी ॥
श्याम मिलहिं तो पाँयन परिहौं यह मेरे मन भाईजी ॥
विनती करि करि उनहिं सुनाऊं निज अपराध क्षमाईजी ॥
यामें दोष नहीं सखि हरिको यह दूषण मोमाईजी ॥ १ ॥
वे मोहन मेरे घर आये मैं मन गर्व बढ़ायोजी ॥
मेरे गर्वते कहा सरचोरी सुख हित ज्यों दुख पायोजी ॥
जाते हानि आपनी होई सो नाहिं करन बतायोजी ॥
मान बिना नाहिं प्रीति रहैरी सखियन वचन सुनायोजी ॥ २ ॥
दोहा—भई फिरत चेरी जिमी; धाय मिली तू जाय ॥
उन्हें भेद दियो आपनों, हमसों बात दुराय ॥
चौबोला—हमसों बात दुराय बिनाभय प्रीति न होवे प्यारीजी ॥
हम जो कहति सो तोय लाडिली मानहु बात हमारीजी ॥
मान करनको मोहिं सखी तुम सिखवत बारंवारीजी ॥
मन नहिं मेरे हाथ अली अब रहै मौनको धारीजी ॥ १ ॥
श्याम गुणन अभिलाषा करिकै उमँग भरत दिन रातैजी ॥
मानसजौं कैसेरी आली मन नहिं मानत बातैजी ॥
मनमोसों अब वाम भयोरी हरिके संग उठ जातैजी ॥
मुदित मूढ अपमान नमानै आपुन हिताहि जनातैजी ॥ २ ॥
दोहा—इन्द्री सब स्वारथ लगीं, गई मनहिं सँग धाय ॥
घर फूटे कैसे बनै, करिये कहा उपाय ॥
चौबोला—करिये कहा उपाय कोऊ अब मेरे सँगमें नाईजी ॥
रही अकेली मैं तनमें अब मेरो नाहिं बसाईजी ॥
तापर भयो काम अब बैरी विरहा अग्नि जराईजी ॥
इतनेपर तुम मान करावति कहति कहा तुम आईजी ॥ १ ॥

मैंतो चूक आपनी मानी को हरि आनि मिलावैजी ॥
अब कैसेहू मान न करिहौं यह मेरे मन आवैजी ॥
सोई हितु जो आनि मिलावै मोहिं नँदनन्दन भावैजी ॥
फिरति रहों सँगही सँग लागी जो अब मोहिं हरि पावैजी ॥२॥

दोहा—ऐसे कहि तब लाडिली, भई विरह उर आय ॥
देखि दशा सहि नाहिं सकी, अली उठी अकुलाय ॥

चौबोला—अली उठी अकुलाय सबन मिल यहै बात ठहराईजी ॥
हम राधाकी प्रीय सखीहैं रचिये बेग उपाईजी ॥
ऐसी चूक परी कहा याते कहैं श्याम सों जाईजी ॥
झुरि झुरि पीरी परी अली यह दीजे याहि मिलाईजी ॥ १ ॥
मतिहि होय व्याकुल सुकुमारी सखिन कह्यो सुनि प्यारीजी ॥
नेकु धीर धरि तोहिं मिलावै हम ल्यावै बनवारीजी ॥
तरक बात बहुभाषि सुनाई पोंछि वदन बैठारीजी ॥
बार बार मुख कान्ह उचारै नेकहु धीर न धारीजी ॥ २ ॥

दोहा—सावधान करि राधिका, दौरिगई अतुराइ ॥
लखि हरि मुख ललिता हँसी, इतलखि हँसे कन्हाइ ॥

चौबोला-इत लखि हँसे कन्हाइ कहत हरि ललितासों मुसकाईजी।
बूझत चितवन नैन चुराई कहा आज इत आईजी ॥
अति आतुर आई कत धाई वदन गयो कुम्हिलाईजी ॥
बोली ललिता तब मुसकाई सुनहू चतुर कन्हाईजी ॥ १ ॥
आज एक अचरज लखि पायो अति विचित्र सुखदाईजी ॥
अतिही अद्भुत रचना जाकी वरनत बनत नताईजी ॥
रीझोगे लखि कुँवर कन्हाई मैं लखि रही लुभाईजी ॥
चलहु लखहु शोभा अति सुन्दर तुमहिं बुलावन आईजी ॥२॥

दोहा—देखि परम सुखपाय हो, जो मानो मो बात ॥

हेम बरन इक बागहै, शोभा कहिय न जात ॥
चौबो०-शोभा कहिय न जात अनूपम लखहु लाल गिरिधारीजी
युगल कमल छबितापर राजत राजहंस शुभकारीजी ॥
द्वै कदली द्रुम तापरसोहै विन दल फल उलटारीजी ॥
तापर मृगपति करत विहारा तापर सरवर भारीजी ॥ १ ॥
है गिरिवर सरवर पर तापर रह कपोत शुभकारीजी ॥
निकट सनाल कमल द्वै फूले लटकितदुहुँदिश डारीजी ॥
फूल्यो पुनि कपोत पर नीको कमल एक छबिभारीजी ॥
तापर एक अमी फल लाग्यो कीर कहत बलिहारीजी ॥ २ ॥
दोहा-तहां वसत इक कोकिला, सो छबि कही न जात ॥
द्वै खंजन तहां राजहीं, तिनपर धनुष सुहात ॥
चौबोला-तिनपर धनुष सुहात धनुषपर द्वै शिशुनागिन बारीजी।
मणि धरि एक नागिनीकारी शोभित अति छबिभारीजी ॥
घटत नेह जल कछु कुम्हिलायो ऐसो बाग बिहारीजी ॥
शोभा देखि सफल दृगकीजै चल सीचहु बनवारीजी ॥ १ ॥
बनी ललित सब अंग पियारी देखहु मनहिं विचारीजी ॥
सुनहु श्याम सुन्दर सुखराशी नवल छैल गिरिधारीजी ॥
तुम्हें मिलनको अति व्याकुलहै नवल बाम सुकुमारीजी ॥
कियो प्रेम करमान लाडिली कहा भयो बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा-प्यारी जीवन जीयकी, अति सुन्दरी सुजान ॥
बरनों अब श्रीराधिका, सुनों नंदके कान ॥
चौ०-सुनों नंदके कान्ह प्रथम रुचि बेनी अति छबिछाईजी ॥
ललित पीठ पाछे अति सुन्दर सोछबि कहत नआईजी ॥
अहिनी मनहुँ कुटिल गति त्यागी शशि मुख सुधा चुराईजी ॥
रेखा अरुण सिंदूर लगाई अति छबि शीश सुहाईजी ॥ १ ॥

तिमिर समूह बिदार उजेरी मनहुँ किरण रवि छाईजी ॥
शोभित कुटिल भ्रुंकुटि अति नीकी सो छैबि कहिय नजाईजी॥
केसर आड ललाट सुभग मनु रूपकी बाढ बँधाईजी ॥
चपल नैन बिन नाक सुहाई अधरनपर अरुणाईजी ॥ २ ॥

दोहा–मनु युग खंजन देखि छबि, बिम्बाफल इक आय ॥
अति मन प्रीति बढ़ायकै, रहत समीप लुभाय ॥

चौ०-रहत समीप लुभाय दशन छबि चिम्बुक अति शुभकारीजी
सुभग अंग सब भूषण सोहै रतन जटित छबि भारीजी ॥
कलस सुखनकी सीर लाडिली अति कोमल सुकुमारीजी ॥
व्याकुल अधिक शरीर भयोहै तुम बिन श्रीगिरिधारीजी ॥ १ ॥
भरि भरि लोचन लेत लाडिली श्याम श्याम रटलाईजी ॥
चलहु हरहु यह पीर कन्हाई मैं लखि आई धाईजी ॥
प्यारी बिकल सुनत बनवारी उठे तुरत अतुराईजी ॥
प्रेम बिबस तब सँग ललिताके चले श्याम सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा–प्यारी ढिग आये हरी, देखत कुँवर कन्हाइ ॥
परी बिकल तनु सुधि नहीं, रहे मनहिं पछिताइ ॥

चौबोला–रहे मनहिं पछिताइ निजकर नीलांबर दियो टारीजी॥
लीनों सन्मुख वदन सुधारी कियो चेत तब प्यारीजी ॥
सन्मुख दृष्टि परत सकुचाई लइ अंकम बनवारीजी ॥
विकल देखि अँखियाँ भरि आई हरि जनके हितकारीजी ॥१॥
युगल परस्पर लखि सकुचाये रहे विरह मुरझाईजी ॥
कंचन वेलि तमाल सुहाई मानहुँ सुधासिचाईजी ॥
हर्ष दुहूँ दिश फूल लग्योसो फलपरमानँद आईजी ॥
मुर्छन विरह तुरत विसराई लखति सखी हरषाईजी ॥

१ भौंह। २ शोभा। ३ माथा। ४ ओष्ठ। ५ अमृत।

दोहा—वह चितवन वह हँसि मिलन, वह शोभासुखभार ॥
भई बिवस ललिता निरखि, इकटक रही निहार ॥
चौबोला—इकटक रही निहार परस्पर देख देख हर्षावैजी ॥
परन नदेत निमेष तृप्त मन होन न दोऊ पावैजी ॥
ललिता कहत सखिन सों बानी हरखै कहि बतरावैजी ॥
देखि सखी राधा अतुरानी कैसी प्रीति जनावैजी ॥ १ ॥
मिले श्याम मन धीरन लेही देखि रही टकलाईजी ॥
तृषावंत जिमि अचवत नीरा सो पुनि धीरज पाईजी ॥
टारत दृग इत उत कहुँ नाहीं लखत छबी अतुराईजी ॥
जिमि चकोर चंदहि टकलावै सो याकी शरनाईजी ॥ २ ॥
दोहा—होम अग्नि घृत देखिये, सो गति याकी जान ॥
यदपि श्याम श्यामा दोऊ, छबि निरखत मनमान ॥
चौबोला—छबि निरखत मनमान परस्पर हाव भाव मनलावैजी॥
विविध विलास वदन छबि सोहै निरखत मदन लजावैजी ॥
विरह विकल मति तदपि भ्रमावै मन प्रतीत नहिं आवैजी ॥
तृषावंत जिमि देखतनीरा ताहि प्यास अधिकावैजी ॥ १ ॥
चितवत चकित रहत चितमाहीं स्वप्न कि सत्य बतावैजी ॥
देखहु अनदेखे ठहरावै यह संशय मन आवैजी ॥
कबहूँ कहति कौनमैं को हरि यह मन माहिं उपावैजी ॥
भावत यह सुख कहति कौनको लखत चकित रहजावैजी॥२॥
दोहा—समुझि परत नहिं प्रेमकी, निपट अटपटी बात ॥
उरझ सुरझ उरझात पुनि, उरझतही सुरझात ॥
चौबोला—उरझतही सुरझात उतहि हरि रूप इते दृग प्यारीजी॥
लखि सखि मनहुँ करत है रारी यह छबि आनँदकारीजी ॥
अति अहंकार भरे भट दोऊ नेकु न मानत हारीजी ॥

अंग अंग शोभित अति सुन्दर भूषण जाल अपारीजी ॥ १ ॥
अति उदार छबि हरिकी लोभी प्यारीके दृगभारीजी ॥
ललिता संग सखिनको लीने दंपति रही निहारीजी ॥
लखि यह मिलन सखी अनुरागी कहति धन्य पिय प्यारीजी ॥
धनि धनि प्रीति नहीं रुचिथोरी धनि जोरी शुभकारीजी ॥२॥

अथ परस्परअभिलाष लीला।

दोहा—धन्य मिलन धनि यह लखन, धनि धनि धनि अनुराग॥
धनि सुख लूटत परस्पर, धनि धनि भाग सुहाग ॥

चौ०-धनि धनि भाग सुहाग हरषि सुख कहति सकल ब्रजनारीजी
युगल रूप उर राखि राखिचली एकहि थल प्रियप्यारीजी ॥
शोभित श्याम राधिका जोरी अरसपरस बलिहारीजी ॥
हरि रीझे प्यारी छबि देखी भये विवस बनवारीजी ॥ १ ॥
कबहुँ पीतपट डारत वारी कबहुँक मुरली वारीजी ॥
कबहुँकमाल मुक्तकी वारै कबहुँक रहत निहारीजी ॥
कबहुँ सिहात देखि हरि मनमें और न यासम नारीजी ॥
रूप सुधानैनन पुट दीजै नहिं कीजै क्षण न्यारीजी ॥ २ ॥

दोहा—कबहुँ श्याम मुख निरखिकै, रहत मनहिं सकुचाय ॥
कोटि काम जाके बसहिं, सो हरि रूप लुभाय ॥

चौबोला—सो हरि रूप लुभाय नानागति हावभाव मन लाईजी॥
चपल नैन दीरघ अनियारे खंजन वार बहाईजी ॥
प्यारीके अंग माहिं श्यामके लोचन नहिं ठहराईजी ॥
भये श्याम प्यारी वश जैसे गुडी डोर वश माईजी ॥ १ ॥
इकटक नैन अंग छबि जोवे निरखत रूप कन्हाईजी ॥
उठे उठत हैं बैठे बैठत टरत एक क्षण नाईजी ॥

चले चलत सँग तुरत बामके ज्यों तनके वश छाईजी ॥
रही सुरत कछु नाहिं श्यामको देह दशा विसराईजी ॥ २ ॥
दोहा—प्यारीहीके रूपकी, अभिलाषा मन माहिं ॥
मगन श्याम रस बामके, निज तनुकी सुधि नाहिं ॥
चौ०-निज तनुकी सुधि नाहीं पुनि पुनि मन अभिलाष बढाईजी।
राधा रूप देखि सुख पावे मगन प्रेमरस माईजी ॥
मांग लेत भूषण प्रिय पाहीं अपने अंगसजाईजी ॥
सजितरवर कुंडलहि उतारे वेसर नाक सुहाईजी ॥ १ ॥
बेनी गूंथ मांग पुनि कीनी शीशफूल शिर लाईजी ॥
शोभित है प्यारीको जैसी बेंदी भाल लगाईजी ॥
प्यारी दृगते अंजन लीनों निज दृग रेख बनाईजी ॥
जैसे भूषण वसन प्रियाके लीने अपुन सजाईजी ॥ २ ॥
दोहा—प्यारीको पियकी छवी, अतिशय कर मनभाइ ॥
हाहा कारि मुख वचन यों, कहति सुनो सुखदाइ ॥
कहति सुनो सुखदाइ मुकुट पीताम्बर देहु कन्हाईजी ॥
मैं पिय तुमरो रूप बनाऊं यह मेरे मन आईजी ॥
हँसतहि हँसत मांग सब लीनों पियको रूप बनाईजी ॥
गोरे कान्ह सांवरी राधा दोउ मन साद पुराईजी ॥ १ ॥
कबहूं मुरली लेत नागरी अधर धराति मुसकाईजी ॥
मंद मंद पूरति सुर सुन्दर रिझवत पियहिं बजाईजी ॥
कबहुँ बजावत श्याम परस्पर रहत अधर सों लाईजी ॥
पूरत है मन काम सकल हरि युगल रूप सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—हरिको अपने रूप लखि, हरिस्वरूप निजधारि ॥
यह अभिलाष मन करी, कहति सुनो बनवारि ॥
चौबो०-कहति सुनो बनवारि मान करि बैठो तुम सुखदाईजी ॥

तुमहिं मनाऊं पाँयन परिकै यह मेरे मन भाईजी ॥
मोको यह अभिलाष विशेषी देखोंगी सुख पाईजी ॥
सुनत श्याम तब मन मुसकाई बैठे मान रुखाईजी ॥ १ ॥
तब प्यारी मन अति अनुरागी हरिसों मान छुड़ावेजी ॥
कहति मान तजि प्राणपियारी बार बार समुझावेजी ॥
मोते चूक परी यह भारी कहतहि कहा रिसावेजी ॥
कहा प्रकृती परी सयानी वृथा मान क्यों ल्यावैजी ॥ २ ॥

दोहा–बहुविधि विनय सुनाय पुनि, चरणन शीश नवाय ॥
मानतजतहो क्यों नहीं, कहा बसी मन आय ॥

चौबोला–कहा बसी मन आय लाडिली क्यों बैठी गरबाईजी ॥
श्याम कियो हठ जानि मनहिंमें यह विचार ठहराईजी ॥
प्यारीके उर माहिं विरहरस नेकु देहुँ उपजाईजी ॥
नाहिं बोलत मानतहै नाहीं बैठ रहे निठुराईजी ॥ १ ॥
बार बार नख भूमि करोवै हँसत न बोलत नाईजी ॥
लखि यह चरित हँसाति तब प्यारी चकित रही मनमाईजी ॥
कहति सुनहु पिय अब हँसि बोलो तजहु मान सुखदाईजी ॥
कोटि चन्द्र छबि बदन दिखावो दीजै खेल मिटाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सूधे नहिं चितवत हरी, हँसाति प्रिया सुखपाइ ॥
बदन विलोकत अति मगन, लखि तिया रूप कन्हाइ ॥

चौ०-लखि तिय रूप कन्हाइ मगन मन भई विरह रस प्यारीजी ॥
अपनो रूप पुरुषको देखी आति मन आनँद भारीजी ॥
मैं नारी वे पुरुष बिहारी कै मैं पुरुष वे नारीजी ॥
भई विकल संभ्रमता भारी तनुकी सुरत बिसारीजी ॥ १ ॥
निरखत श्याम विरहकी शोभा बोलत नाहिं कन्हाईजी ॥
कबहुँ कहति अब मान करो जिन नीके लागत नाईजी ॥

कबहुँ अंक भरि उरसों लावत फिर पर पांय मनाईजी ॥
कबहुँ दोऊ कर जोरि मनावै कबहुँ निरख रह जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—कबहूँ पाछे ह्वैरहति, कबहुँक आगे जाय ॥
कबहुँ उठति बैठति कबहुँ, कबहुँक लेतबलाय ॥
चौबोला—कबहुँकलेत बलायविरहरस भरिगयो हियेअपारीजी॥
कबहुँ कहति हैं पीय श्यामसों कबहुँ कहति है प्यारीजी ॥
धीरज धरत न हीय निकटही भई विरह वशभारीजी ॥
भई विरह व्याकुल जब बाला तबहिं हँसे बनवारीजी ॥ १ ॥
लई तुरत उर लाय श्याम कहि ख्यालहि में अकुलाईजी ॥
तुमहीं मानकरन मुहिं भाष्यो धीरज राख्यो नाईजी ॥
मैंतो तुमको भाव बतायो तुम काहे डर पाईजी ॥
देखि विरहव्याकुल मुरझाई पुनि पुनि अंकमलाईजी ॥ २ ॥
दोहा—अमिय वचन शीतल करी, विरहतापदियोखोय ॥
मिट्यो विरह हरषित भई, रही श्याम तनु जोय ॥
चौ०-रही श्याम तनुजोय कहतिं पिय भलो यह मानदिखायोजी
मेरे मन अभिलाष पुरायो लखि मुहि आनँद आयोजी ॥
त्रियको रूप श्याम छबि देखी अतिमन हरष बढ़ायोजी ॥
दंपति हरष मनहिं मनकीनों कुंज़ चलन मन भायोजी ॥ १ ॥
प्यारी देख्यो मुकुर आपनिज नटवर रूप लखाईजी ॥
हँसतहि हँसत मेट सब अपनो लीनो रूप बनाईजी ॥
युगल नागरी रूपबने दोउ चले कुंज बनमाईजी ॥
इक गोरी इक वरण साँवरी शोभा परम सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा—अति विचित्र भूषण वसन, अंग अंग छविजाल ॥
शोभा अवधि विलास निधि, श्रीराधा नँदलाल ॥

१ छाती। २ अमृत। ३ श्रीकृष्ण-राधा। ४ दर्पण।

चौबोला—श्रीराधा नँदलाल जात चले ब्रज बीथिन समुहाईजी॥
लखिनहिं सकत नारि नर दोऊ अति छबि कहत न आईजी॥
नँदनन्दनातिय छबि अति सुन्दर राधा संग सुहाईजी॥
बार बार पियरूप निहारी प्यारी मन सुखपाईजी॥ १॥
कहति सखी देखे जिन कोई बूझत कहा बताईजी॥
तीन भुवन शोभा सुखकी निधि किहिं विधि रहत छिपाईजी॥
पगनूपुर विछिया छबिछाजै गजगति चलन सुहाईजी॥
श्याम गौर सुन्दर सुखजोरी उपमा बरनि न जाईजी॥ २॥

दोहा—भुजा कंठधरि परस्पर, चले युगल बनजात॥
या छबिको उपमा नहीं, निरखत मदन लजात॥

चौबोला—निरखत मदन लजात उतहिते चंद्रावलि सखिआईजी
दूरहिते लखि रही निहारी इकटक नैन लगाईजी॥
एक राधिका दूसरिकोहै पहिचानति मैं नाईजी॥
ब्रज युवतिन इक इक करि जानू ये धौं नई कोउ आईजी॥
और गामते यह कोउ नारी आईहै ब्रज माईजी॥
अतिही श्याम सलोनी सुन्दर अबलौं देखी नाईजी॥
चन्द्रावलि आवत उत देखी राधा मन सकुचाईजी॥
रही श्याम मुख जोय लाड़िली फेरति ब्रजहि कन्हाईजी॥ २॥

दोहा—करते कर छूटत नहीं, रही प्रेम वश आय॥
उत आवत देखी सखी, मन मन गई लजाय॥

चौबोला—मन मन गई लजाय राधिका इत हरि नेह लुभाईजी॥
उत चन्द्रावलि इन रँगराची भरी हरी रस माईजी॥
कहति निकट देखोधौं जाई कहूँ कहांते आईजी॥
देख श्याम मुख छबि मुसकाई जानि लई चतुराईजी॥ १॥
इनते निधरक और न कोई कैसी बुद्धि रचाईजी॥

निजकर इन्हें विधाता जानै भरे दोऊ चतुराईजी ॥
और कहा इनको कोउ जानैं मैं पहिचानति नाईजी ॥
सकुच छांडि अब इनाहिं जनाऊँ जानाति क्यों निदराईजी ॥२॥
दोहा–जो इनको टोकों नहीं, जीत मनाहिं मन जाइ ॥
प्रगट करों इनके गुणन, करी इन्हें चतुराइ ॥
चौ०-करी इन्हें चतुराइ बहुरि यह बाम रूप कब धारीजी ॥
आज प्रगट कहि लाज लजाऊँ कहन लगी सुन प्यारीजी ॥
कहि राधा यह कौन तिहारे संग सांवरी नारीजी ॥
नाहिं देखी इनको कबहूँ हम अति सुन्दरि सुकुमारीजी ॥ १ ॥
को है इनको नाथ कहो किन कौन गोपकी जाईजी ॥
भली बन्यो है साथ जैसि तुम तैसि मिली यह आईजी ॥
मथुराते यह आजहिं आई इनसों प्रीति सवाईजी ॥
दधि वेचन गइ तहाँ एक दिन ललिताके सँग माईजी ॥ २ ॥
दोहा–उनहींके सँग हम मिली, तबहीं भई चिन्हारि ॥
वाहि सनेह यह जानि मन, आई है सुकुमारि ॥
चौ०-आई है सुकुमारि गेहते इतहीको चलि आईजी ॥
येऊ आय मिली मग मांई रही दोऊ बतराईजी ॥
सुनि राधा यह सहज सुहाई शील रूप अधिकाईजी ॥
इनको ब्रज में क्यों न बुलावो निकटहि देहु बसाईजी ॥१॥
कै वृषभानु पुरा कै गोकुल सहित कुटुंम बुलावोजी ॥
तुमहो नवल नवल हैं येऊ दोऊ मिल हरिहि रिझावोजी ॥
हमहूंको अब इनहिं मिलावो नीके वदन दिखावोजी ॥
हमहिं देखि सकुचत कत प्यारी कत घूंघट छिटकावोजी ॥२॥
दोहा–ऐसे कहि चंद्रावली, गह्यो श्याम करजाय ॥
यह कहुँ अबलों नाहिं सुनी, तियसों तिय सकुचाय ॥

चौबोला–तियसों तिय सकुचाय पियारी कहा लाज रहिधारीजी
घूंघट पट हातो कर दीनो दीनो वदन[1] उघारीजी ॥
अपने दृगन[2] सफल करि माने मुख छबि रही निहारीजी ॥
चितवत क्यों नाहिं वदन उघारी कहति बारही बारीजी ॥ १ ॥
कहानाम मुख वचन कहो किन मथुरा बास तुम्हारोजी ॥
कियो राधिका यह उपकारो दुर्लभ दरश तिहारोजी ॥
कह सकुचत हमसों तुम प्यारी मानों वचन हमारोजी ॥
गहि चिबुक बूझति चंद्रावलि कछु मुख वचन उचारोजी॥ २ ॥

दोहा–दे चुटकी बोली सखी, इत चितवहु तुम बाम ॥
नैन नैन जोरत नहीं, रहे लजाये श्याम ॥

चौबोला–रहे लजाये श्याम देखि चंद्रावलि मन मुसकाईजी ॥
हँसि बोली राधा सों वाणी धनि तुम प्रीति लगाईजी ॥
ऐसी सखी मिली यह तुमको तबहिं हमें बिसराईजी ॥
इनसों प्रीति करी तुम तबते चतुर भई अधिकाईजी ॥ १ ॥
हमसों कबहूँ नाहिं जनाई अबलों कहांलकोईजी ॥
एकहि इन्है विधाता कीनी तीनलोक निधि सोईजी ॥
रहो कुशल येऊ अरु तुमहूँ क्यों न प्रीति दृढहोईजी ॥
जानेहो चले जाहु वनाहिं तुम आपस्वारथी दोईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनि चंद्रावलिके वचन, दंपति कियो विचार ॥
हर्षि मिले उरलायकहि, यासों नाहिं उवार ॥

चौबोला–यासों नाहिं उबार हरषिमन चले कुंज समुहाईजी ॥
उभय वाम बिच कुँवर कन्हाई सो छबि कहत न आईजी ॥
बाम भाग प्यारीको लीने दक्षिण सखी सुहाईजी ॥
द्वैदामिनि विच नवघन[3] मानो निरखत मदन लजाईजी ॥ १ ॥

१ मुख। २ आंखैं। ३ बादल।

कैधौं कंचन बेल सुहावन मनुतमाल लपटाईजी ॥
सुमन पुंज अलिगुंज सुहाई गये कुंजबन माईजी ॥
नाना वरण कुसुम तरु सुन्दर अति विचित्र छबि छाईजी ॥
बहत समीर त्रिविध सुखदाई पावन भूमि सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कुंज पुंज छवि देखि शुभ, सहचरि सहित सुहाय ॥
विलसत विविध विलास लखि, कोटिक मदन लजाय॥
चौ०-कोटिक मदन लजाय शोभित शुभ गौर श्याम छविछाईजी
निरखत छबिहि सखी तृणतोरी आनँद उर न समाईजी ॥
सने रसिक दोउ रसरसकाई बसे निशा बन माईजी ॥
तैसोइ विपिन सुहावन सुन्दर तैसिय पवन सुहाईजी ॥ १ ॥
तैसिय निर्मल सुभग चाँदनी तैसिय सुख छविछाईजी ॥
तैसोइ कुंज निवास तेसोई यमुना पुलिन सुहाईजी ॥
सकल सुखनकी राशि युगल छवि रँग भीने सुखदाईजी ॥
बनहिं धाम सुख रैन विहाई उठे प्रात अलसाईजी ॥ २ ॥
दोहा–उठे प्रात सुन्दर सुखद, अति छबि बरनि न जात ॥
बैठे रंग भीने युगल, अलसाने दोउ गात ॥
चौबोला–अलसाने दोउ गात परस्पर अंगन भुजा लगाईजी ॥
अरस परस दोउ रूप निहारे रीझत अति मनमाईजी ॥
अरुण नैन शोभित अति सुन्दर सो छवि कहत न आईजी ॥
लटपटी पाग रसमसी भौं हैं कुंडलकी झलकाईजी ॥
त्रिया बदन छवि श्याम निहारी अति मन आनँद भारीजी ॥
उरझीलट मुक्तन निरवारत अरस परस बलिहारीजी ॥
आलस नैन सुरत रस पागे निश जागे पिय प्यारीजी ॥
नख शिख सुन्दर पिय अरु प्यारी मदन रती दोउ वारीजी ॥ २ ॥
दोहा–युगल विहारी कुंजते, चले परमसुख पात ॥

छबि निरखत अति हर्षि मन, विहारन बलि बलि जात
चौ०-विहारन बलि बलि जात सुन्दर राधा कुँवर कन्हाईजी ॥
जीते सुन्दर रति पति कामा चले धाम हरषाईजी ॥
सुन्दर अवलोकन मृदु बोलन सुन्दर चाल सुहाईजी ॥
सुन्दर सुखके धाम मनोहर उपमा कहत न आईजी ॥ १ ॥
लीला ललित श्याम सुन्दरकी अति विचित्र अभिरामाजी ॥
जो सुख दुर्लभ शिव सनकादहि सो बिलसत ब्रजबामाजी ॥
सहचरी सहित बिलस रस सुन्दर गये युगल ब्रजधामाजी ॥
श्याम हृदयमें बसत पियारी बसत प्रिया उर श्यामाजी॥ २ ॥

अथ श्रृंगारवर्णन लीला ।

दोहा-अंग श्रृंगाराति लाडिली, बैठ भवन निजधाम ॥
रतिरण जीते पीय सों, बांटति मनहुँ इनाम ॥
चौ०-बांटति मनहुँ इनाम वसन नव दिये अंग पहराईजी ॥
बाजूबंद भुजनको दीने श्रवण तरुवनबकसाईजी ॥
कर कंकण दीने उरहारा वेसर नाक निकाईजी ॥
अंजन दृगन दियो अति हित करि बेंदी भाल लगाईजी ॥ १ ॥
रची मांग सम भाग ताहि मधि रेख सिंदूर लगाईजी ॥
जिमि यमदूत जानि हरि बेमुख बांधति कुचन बनाईजी ॥
दियो हरषि बीरा अधरनको अधिक अरुणता आईजी ॥
श्रीवृषभानु कुँवरि छबि छाई राजति सदन सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा-चंद्रवदन अरु मृगनयन, भ्रुकुटी कुटिल कलंक ॥
अलक झलक सुन्दर जनु, शोभित रजनी अंक ॥
चौ०-शोभित रजनी अंक दशन मनु कुंदकली छबि छाईजी ॥
तिल प्रसून नासा शुभकारी अधर अनूप सुहाईजी ॥

१ घर । २ देखन । ३ कोमल । ४ सखी । ५ रात्रि । ६ फूल ।